

हंसता हुनिया

* वर्ष 47

* अंक 2

* फरवरी 2020

₹15/-





हँसती दुनिया

• वर्ष 47 • अंक 02 • फरवरी 2020 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी

ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम.पी. प्रिटर्स वी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक सहायक सम्पादक
विमलेश आहूजा **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200

Fax: 01127608215

Email: editorial@nirankari.org

Website: <http://www.nirankari.org>

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	\$25	\$70	\$120	\$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	\$30	\$85	\$140	\$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।



स्तरभ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
8. गुरु-वन्दना
11. समाचार
29. यह भी जानें
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. क्या आप जानते हैं?
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

तित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किटटी



कविताएं

17. ऋतुराज बसन्त
: रामअवधि राम
17. मौसम बसन्त का
: राधेलाल 'नवचक्र'
25. लो आया बसन्त
: राजेश पुरोहित
25. पेड़ और पर्यावरण
: गणेश 'चंचल'
30. धूप
: सुकीर्ति भट्टनागर
30. बसंत पंचमी उत्सव महान
: हरजीत निषाद
47. खुशी लुटाते फूल
: भानुदत्त त्रिपाठी

विशेष/लेख

6. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज
के दिव्य वचन
16. विटामिन 'सी' से सुरक्षा पाइए
: विभा वर्मा
20. अग्निमुख मछली
: डॉ. परशुराम शुक्ल
24. भेड़िया
: कमल सौगानी
26. रंगीन संसार तितलियों का
: अंकुश जैन
28. घड़ियाल
: अंकुर श्रीश्रीमाल
41. फुर्तीला और जिज्ञासु होता
है : ऊदबिलाल
: दीपांशु जैन

कहानियाँ

10. फल परिश्रम करने वाले
को ही मिलता है
: शिवनारायण सिंह
18. सौम्य की इच्छा
: आरती लोहनी
22. सुन्दरता का घमण्ड
: गोविन्द भारद्वाज
27. कोयल और बगुला
: राधेलाल 'नवचक्र'
31. नीम का घमण्ड
: डॉ. विद्या श्रीवास्तव
32. सच्चा न्याय
: डॉ. विजय प्रकाश
39. तेजू गिर्द और पक्षी
: फारुख हुसैन
46. स्थायी विजय
: ईलू रानी

प्रेममय व्यवहार

हर व्यक्ति जन्म के दिन से ही माँ के मातृत्व एवं प्रेम से अपना जीवन आरम्भ करता है। माँ का प्यार-दुलार एवं पिता का स्नेह लगभग प्रत्येक बच्चे को जन्म से ही मिल जाता है। बच्चा भी प्रेम की भाषा को अच्छी तरह पहचान लेता है। उसको जो भी प्रेम से पुकारता या पुचकारता है वह उसमें ही अपनापन महसूस करता है। बच्चा प्रेम भाव के प्रति आकर्षित हो जाता है। धीरे-धीरे वह बड़ा होता रहता है और उसे चारों ओर से भी प्यार ही प्यार मिलता है। साथ ही उसे प्रेम से बात करने, सभी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने का प्रशिक्षण भी मिलता रहता है।

अब शिक्षा प्राप्ति के लिए वह स्कूल जाने लगता है। वहाँ भी प्रेम का पाठ पढ़ाया जाता है फिर भी जाने-अनजाने प्रेम में कुछ और भी मिश्रण होता चला जाता है। उसके व्यवहार में भी परिवर्तन की झलक मिलनी आरम्भ हो जाती है। अपने सहपाठियों से प्रतिस्पर्धा एवं मुकाबला करने की प्रवृत्ति को बल मिलने लगता है। प्रतियोगिता में वह अन्य से आगे निकलना चाहता है और इसी होड़ में वह अनायास ही उनसे प्रेम से अलग अन्य भावना से बात करना आरम्भ कर देता है। यहाँ से हार-जीत की भावना पैदा होती चली जाती है। जब वह जीत जाता है तो अपने को योग्य मानता है और प्रसन्न भी होता है। अगर वह हार जाता है तो वह जो जीत गये हैं, उनको पीछे छोड़ देने की भावना से ओत-प्रोत हो जाता है। अब यह भावना यदा-कदा द्वेष और दूसरे को गिराने का कारण भी बन जाती है क्योंकि उसका हारना उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाता है। अब जीतना उसके अहंकार की तुष्टि का साधन बन जाता है। इस तरह से जो यात्रा प्रेम से आरम्भ हुई थी।

वह द्वेष, अहंकार, प्रतिस्पर्धा एवं प्रतियोगिता में बदल जाती है और उसका स्वरूप बिगड़ जाता है।

यहाँ चिन्तन-मनन का विषय है कि हम सभी कैसे प्रेमपूर्वक रहकर सौहार्द वाला वातावरण बनाए रख सकें। इसके लिए हमें हार-जीत, प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा को केवल अपने आपको और योग्य बनाने की ओर केन्द्रित करना होगा। अपनी मनोस्थिति को इस अवस्था में रखना होगा कि हम स्वयं अपने हर कार्य के प्रति केन्द्रित हों। हार-जीत अथवा प्रतिस्पर्धा हमारे जीवन का उद्देश्य नहीं है यह तो केवल स्वयं के आंकलन का तरीका मात्र है। हमें हर कार्य में खेल भावना (Sportsman Spirit) को अपनाना होगा। जो जीता उसका प्रेमपूर्वक हृदय से अभिवादन करना चाहिए और जो नहीं जीत पाया उसको भी उतनी ही खुशी एवं प्रसन्नता होनी चाहिए और प्रेमपूर्वक परिणाम का अभिनन्दन करना चाहिए।

प्यारे साथियों! हमें हमेशा ही हर स्थिति-परिस्थिति में अपने अन्तर की प्राकृतिक खुशी और प्रेम को सदा सम रखना होगा। प्रेम की अवस्था ही हमारे जीवन की शैली होनी चाहिए। जन्म से प्रेम से पोषित हुए हमारे संस्कार अन्य संस्कारों को जीवित रखते हैं; इसलिए कि हम सभी के साथ प्रेम का व्यवहार कर सकें।

यही सन्देश सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज बच्चों, बड़ों एवं समस्त मानव समाज को देते रहे। उन्होंने साथ में यह भी कहा कि प्रेम छोटे-बड़े, जाति-धर्म, ऊँच-नीच का मोहताज नहीं होता।

23 फरवरी सन् 1954 को बाबा हरदेव सिंह जी का इस धरा पर आगमन हुआ था। हम सभी बाबा जी के सन्देश को हृदय में धारण कर सकें। अतः आज से हम सभी को प्यार-सत्कार देंगे वह भी अपने दिल की गहराईयों से और हमारा हर दिन इसी प्यार-सत्कार से महकेगा।

— विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 217

तन दा सुच्चा मन दा सच्चा धन वी खून पसीने दा।
 दिल दा कोमल ते विश्वासी करम करे मस्कीने दा।
 सबर शुकर भरवासे वाला भजन बन्दगी आम करे।
 संगी साथी सभ गुणवन्ते कुल दा रोशन नाम करे।
 एह सिफ़तां ने सारे सिफ़रे ज्ञान दा एका लग्गा नहीं।
 कहे अवतार बिना गुर पूरे होन्दा पूरा सग्गा नहीं।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि व्यक्ति में अनेकों अच्छाईयां होने के बावजूद जीवन सफल नहीं हो पाता। उसकी इस असफलता का मूल कारण यह है कि उसने अन्य अनेकों उपाय तो अपनाए लेकिन सदगुरु का सहारा नहीं लिया। व्यक्ति का तन पावन और स्वच्छ हो, वह मन का सच्चा और निर्मल हो और उसके पास खून-पसीने की सच्ची कमाई भी हो, फिर भी उसका जीवन सफल नहीं माना जाता। क्योंकि उसने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात प्रभु की प्राप्ति पर ध्यान ही नहीं दिया। इन्सान तन की साफ-सफाई और मन की निर्मलता के लिए अनेकों उपाय करता है, वह कीमती साँदर्य प्रसाधनों का भी सहारा लेता है। वह यह भी प्रयास करता है कि उसके पास जो धन है वह छल-कपट से अर्जित किया हुआ न हो बल्कि खून-पसीने की कमाई वाला हो। वह अपने आपको सच्चा स्थापित करने के लिए अनेकों बाहरी उपाय करता है लेकिन जब तक उसे सदगुरु के चरणों में आकर परमात्मा का बोध हासिल नहीं होता तब तक उसकी सारी अच्छाईयां शून्य के समान ही मानी गई हैं। व्यक्ति कोमल दिलवाला हो और हर किसी के प्रति दया-करुणा वाला भाव भी रखता हो, यही नहीं उसके कर्म भी बिनप्रता वाले हों। फिर भी अगर उसके पास परमात्मा की जानकारी नहीं है तो उसका जीवन सफल नहीं कहा जाता।

बाबा अवतार सिंह जी इसे और स्पष्ट करते हुए कह रहे हैं कि आदमी सबर-शुकर और भरोसे-विश्वास वाला हो, वह परमात्मा की भजन-बन्दगी करने वाला हो, उसके संगी-साथी सभी अति गुणवान हों, वह अपने कुल का नाम रोशन करने वाला हो, फिर भी इतनी सारी खूबियों वाला इन्सान अधूरा ही है। वह पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सका है। ठीक उसी तरह जैसे बहुत सारे शून्य तब तक शून्य ही हैं जब तक कि उनके साथ एक न लगा हो। एक के बाद चाहे कितने शून्य बढ़ाते जाएं सबका मूल्य है, सबका लाभ है, सबकी उपयोगिता है लेकिन एक न हो तो हजारों शून्यों की भी कोई कीमत नहीं होती है। ये बड़ाईयां, उपलब्धियां, योग्यताएं तभी शोभा पाती हैं जब ज्ञान रूपी 'एक' भी उनके साथ हो।

बाबा अवतार सिंह जी यहाँ अनेकों उदाहरणों द्वारा यही स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं कि इन्सान सदगुरु के चरणों में आकर परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करे फिर जीवन में सच्चाई, अच्छाई, दया, परोपकार, भरोसा, विश्वास और पूजा-बन्दगी सब मुबारक हैं। हर इन्सान ज्ञान रूपी इस 'एक' की कद्र करे, वह केवल माया रूपी शून्य बढ़ाने में ही अपना जीवन न लगा दे। अगर वह ऐसा ही करता रहा तो उसका जीवन सार्थक नहीं हो पाएगा। जीवन रहते इस एक प्रभु की जानकारी प्राप्त करना बहुत जरूरी है।

बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन

- ★ महापुरुषों का जीवन समाज के लिए रोशनमीनार होता है। वे अपने जीवन द्वारा समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं।
- ★ बद्धज्ञानियों की मर्यादा है, निरंकार-दातार की रजा में रहते हुए सदाचारी आदर्श जीवन जीना।
- ★ सन्त-महात्मा सदा निरंकार-दातार का सहारा लेते हैं और दातार इनकी रक्षा के लिए हमेशा हाजिर रहता है।
- ★ तलवार के ज़्यग्म भर जाते हैं परन्तु जुबान के द्वारा कहे गये वचन दिलों को छलनी कर देते हैं।
- ★ एक बोल संवारने वाले और एक बिगाड़ने वाले होते हैं लेकिन कर्म का स्थान बोलों से भी ऊँचा है।
- ★ अहंकार अगर ऋषि-मुनियों को भी आ जाये तब भी वह पतन का ही कारण बनता है।
- ★ हमेशा अच्छों का संग करें। पवन का संग पाकर पांव के नीचे रोंदी जा रही धूल भी आसमान को छू लेती है।
- ★ अज्ञानता के अंधकार में रहकर तय किया गया जीवन सफर, धरती पर बोझ के समान है।
- ★ घृणा-वैर, लोभ-लालच मन के रोग हैं। प्रेम, करुणा, दया आने पर ये रोग चले जाते हैं।
- ★ हम केवल मानव का तन लिये ही न फिरें बल्कि मानवीय गुणों से युक्त भी हों।
- ★ प्रभु-स्तुति में लगी वाणी तथा प्रेम और सत्य की तरफ से हटकर जो कुछ भी बोला जा रहा है महापुरुषों ने उसे बकबक कहा है।
- ★ सन्तों की ऊँची मत ले लो जीवन की चाल सुन्दर हो जायेगी।
- ★ ठीक सुनकर मानना और उसके अनुसार ही चलना आ जाये तो वाकई हम लाभान्वित होते हैं।
- ★ आज इन्सान सत्य की तरफ नहीं, झूठ की तरफ जाग्रत है। इसका मानवता की ओर जाग्रत होना बहुत जरूरी है।
- ★ अंधेरा रोशनी से ही मिटता है किसी और प्रयत्न से नहीं। इसी तरह बंधनों से निजात परमात्मा को जानकर ही मिलती है।
- ★ खुशबूदार फूल की महक जिसके पास होती है वह स्वयं तो खुशबूले रहा होता है और जो भी उसके सम्पर्क में आता है वह भी महक और आनन्द प्राप्त कर लेता है।
- ★ सच्चाई का प्रचार बोलों से नहीं, सद्कर्मों से होता है। हमारा कर्म भी वैसा ही होना चाहिए जैसी हम बातें करते हैं।
- ★ इन्सान वही है जो दूसरे के सुख-दुख को अपना मानकर उसके सुख-दुख में शामिल होता है, दूसरे की तरक्की को देखकर खुश होता है।
- ★ महात्मा को मानने का अर्थ यह नहीं कि हम उसके शरीर का ही आदर-मान करें। महात्मा को मानने का भाव है उसके उपदेशों को मानना।

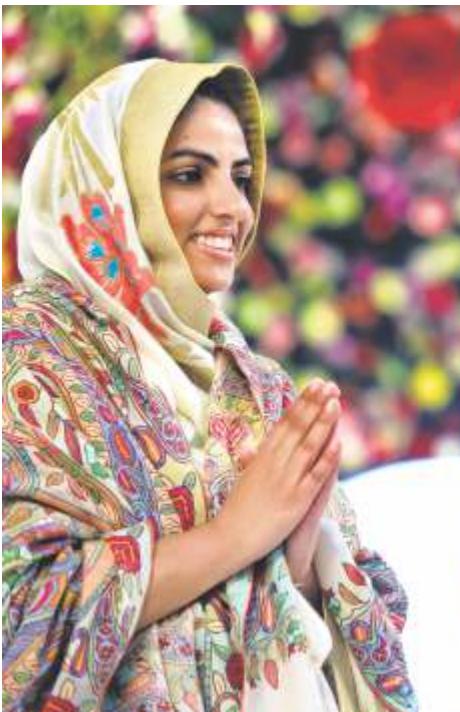
- ★ परमात्मा को भुलाने का मतलब मन में विकारों का जन्म है, जिससे मन संकीर्ण, अभिमानी, लोभी बन जाता है।
- ★ सन्त-महात्माओं द्वारा दिया गया संदेश हर युग में कल्याणकारी होता है।
- ★ अगर हम घर और परिवारों के वातावरण को सुन्दर बनायेंगे तो निश्चित तौर पर सारा विश्व सुन्दर बन जायेगा।
- ★ भ्रम की जंजीरें तोड़ने के लिए ज्ञान रूपी हथौड़ा जरूरी है।
- ★ नशा अगर चढ़ना चाहिए तो भक्ति का चढ़े। दुनियावी नशे गिरावट की ओर ले जाते हैं परन्तु नाम का, भक्ति का नशा उज्ज्वलता की ओर ले जाता है।
- ★ अपने पारिवारिक व सामाजिक कर्तव्यों की पालना करते हुए निराकार-दातार का अहसास बनाये रखें।
- ★ सोच का सही मोड़ कल्याणकारी होता है जबकि गलत मोड़ विनाशकारी होता है।
- ★ प्यार से जीवन जीने वाला ही वास्तव में सार्थक जीवन जीता है। जो प्यार करना भूल जाता है वह इन्सानियत ही भूल जाता है।
- ★ सबसे सुन्दर मानव जीवन मिला है लेकिन इन्सान अपनी फितरत से इस जीवन के रुतबे को गिरा रहा है। इन्सान को अपनी असली पहचान कायम करने के लिए दिव्य गुणों से युक्त होना होगा।
- ★ एकत्व भाव को अपनाकर मानवता की डगर पर चलें।

संकलनकर्ता : रीटा (दिल्ली)

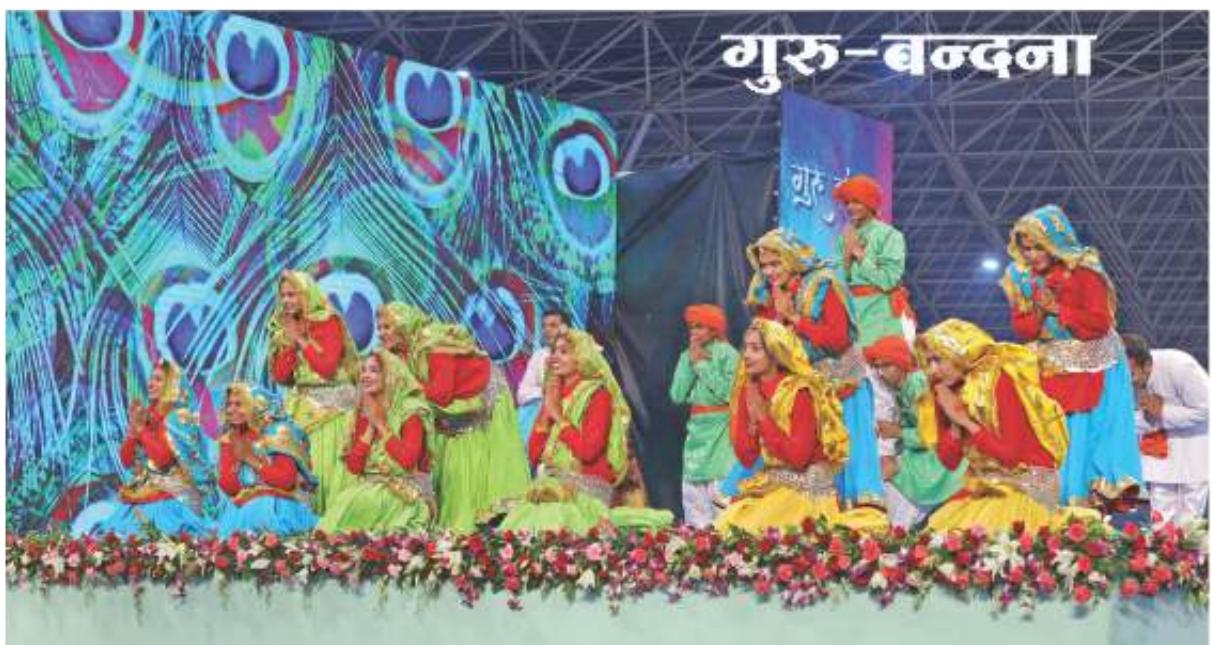


ગુરુ-વન્દના

‘निरंकारी आध्यात्मिक स्थल’ (समालखा) में हुए 72वें अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन (समागम) में निरंकारी भक्तों ने सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रस्तुतियां प्रस्तुत कर गुरु-वन्दना की।



ਗੁਰੂ-ਕਲਾਨਾ



फल परिश्रम करने वाले को ही मिलता है

जैसे-जैसे परीक्षाओं के दिन करीब आते जा रहे थे, राजू की परेशानी बढ़ती जा रही थी। उसने पूरे वर्षभर पढ़ाई नहीं की थी। पाठ्यपुस्तकों को कभी हाथ तक न लगाया था। कक्षा में टीचर की बातों पर कभी ध्यान देने की उसने जरूरत नहीं समझी थी। घर पर भी वह किसी का कहना नहीं मानता था। स्कूल से घर आते ही वह खेलने के लिए बाहर निकल जाता और काफी देर बाद घर लौटता। सुबह भी वह देर से उठकर जल्दी-जल्दी नहा-धोकर किसी तरह तैयार होकर स्कूल के लिए चल देता।

उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि इतने थोड़े से समय में वह परीक्षा से कैसे निपटे। तभी उसे सामने वाली पहाड़ी का ध्यान आया। गाँव की पहाड़ी पर सरस्वती देवी का मन्दिर था। उसने सोचा— चलकर विद्या की देवी को मनाया जाये। देवी-देवता तो प्रार्थना से प्रसन्न हो जाते हैं और मनोकामना पूरी करते हैं।

वह अब रोज सुबह गाँव की पहाड़ी पर देवी के मन्दिर जा पहुँचता। वहाँ जाकर वह सरस्वती की पूजा-अर्चना करता, धूप-दीप जलाता और देवी के आगे खड़ा होकर खूब प्रार्थना करता। उसे विश्वास हो गया था कि सरस्वती देवी प्रसन्न होकर परीक्षा में उसकी सहायता अवश्य करेगी। वह परीक्षा में उत्तीर्ण अवश्य हो जायेगा। उसकी प्रार्थना और पूजा अर्चना व्यर्थ न जायेगी।

परीक्षाएं आरम्भ हो चुकी थीं। राजू का एक भी पर्चा ठीक से नहीं हो रहा था। वह किसी भी प्रश्न का ठीक से उत्तर लिख नहीं पा रहा था। फिर भी उसे देवी पर

विश्वास था। वह सोच रहा था कि कोई चमत्कार अवश्य होगा। पर उसका ऐसा सोचना ठीक न निकला। परीक्षा परिणाम घोषित किये गये। उसकी कक्षा के काफी छात्र उत्तीर्ण हो गये थे। कुछ ही छात्र अनुत्तीर्ण हुए थे, जिनमें वह भी था। उसने अपना माथा पीट लिया। वह बोला— भला यह कैसे हो गया? उसने तो विद्या की देवी सरस्वती की आराधना भी की थी। उसकी आराधना निष्कल कैसे हो गई?

वह आज शाम को नित्य की तरह गाँव की पहाड़ी पर जाकर देवी के मन्दिर में जा पहुँचा और बोला— आप कैसी विद्या की देवी हैं? आपने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी। मैंने आपकी इतनी आराधना की मेरी आराधना निष्कल हो गई।

वह थके मन से घर लौट गया। बहुत ही बेमन से थोड़ा-सा भोजन कर वह पलांग पर जा लेटा। उसे आज नींद नहीं आ रही थी। नींद आने पर उसने सपना देखा। सपने में उससे सरस्वती देवी बोली— नादान बालक! तूने मुझ पर नाहक क्रोध किया है। मैं विद्या की देवी सरस्वती हूँ। मैं सच्चे अर्थों में उन किताबों में रहती हूँ जिनको तूने कभी हाथ तक नहीं लगाया है। मैं अध्ययनशील लोगों के दिलों में रहती हूँ। तूने परीक्षा में पास होने के लिए बड़ा सरल मार्ग अपनाना चाहा। तूने बार-बार मेरे मन्दिर में आकर अपना वक्त बर्बाद किया। तुमने बगैर परिश्रम किये मेरी प्रसन्नता पानी चाही पर मैं सिर्फ उन लोगों की सहायता करती हूँ जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। पढ़ाई-लिखाई छोड़कर जो लोग परिश्रम से बचना चाहते हैं वे देवी-देवताओं के पीछे पड़े रहते हैं। याद रखो, फल परिश्रम करने वाले को ही मिलता है।

राजू की नींद खुल गई। उसने खिड़की से बाहर देखा। आसमान पर सूरज की पहली किरण फूट रही थी।

वह बोला— अब से मैं मन लगाकर पढ़ा करूँगा और परीक्षा में उत्तीर्ण होकर रहूँगा।

समाचार

उल्कापिंडों में मिले 'शुगर मॉलीक्यूल', पृथ्वी पर जीवन लाने में इस तरह से करते हैं मदद

नई दिल्ली। वैज्ञानिक आए दिन कोई न कोई खोज किया करते हैं, इस बार वैज्ञानिकों ने पहली बार उल्कापिंडों में 'शुगर मॉलीक्यूल' की उपस्थिति का प्रमाण ढूँढ निकाला है। धरती पर जीवन की शुरुआत होने में 'शुगर मॉलीक्यूल' की अहम भूमिका मानी जाती है। इस खोज से पृथ्वी पर जीवन पनपने में उल्कापिंडों की भूमिका को मजबूती मिली है। एक जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि जैविक प्रक्रिया के लिए शर्करा (शुगर) महत्वपूर्ण है।

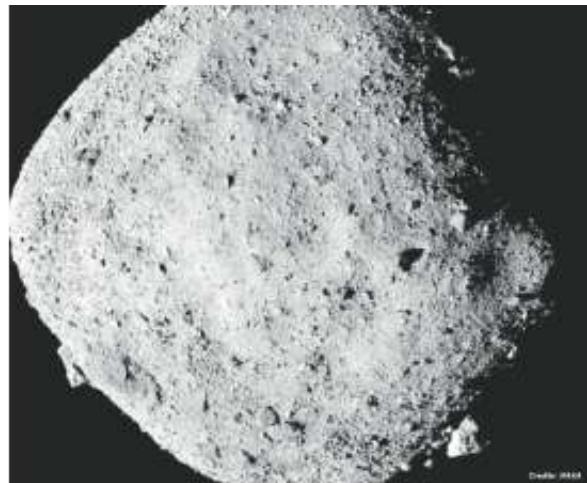
दरअसल, पृथ्वी पर शुगर मॉलीक्यूल आने से ही कुछ शुरुआती जटिल जैविक अणुओं का निर्माण हुआ होगा। जापान की तोहोकु यूनिवर्सिटी के योशिहिरो फुकावा सहित अन्य शोधकर्ताओं ने तीन गैर धात्विक और कार्बन की अधिकता वाले उल्कापिंडों का विश्लेषण किया। इनमें से एक मार्चिसन उल्कापिंड है, जो 1969 में ऑस्ट्रेलिया में गिरा था।

बैक्टीरिया का पता लगाने का उपकरण विकसित

गुवाहाटी (भाषा)। आईआईटी गुवाहाटी के अनुसंधानकर्ताओं ने कोशिका कल्चर एवं सूक्ष्मजीव वैज्ञानिक परीक्षण के बैगेर बैक्टीरिया का तुरन्त पता लगाने के लिए एक अनूठा और सस्ता उपकरण विकसित किया है। मैटेरियल्स कैमेस्ट्री नामक पत्रिका में छपे इस अध्ययन के अनुसार इस उपकरण से बैक्टीरिया का शीघ्र पता चल जाएगा जो न केवल स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए बल्कि जैव आतंकवाद निरोधक उपायों और पर्यावरण निगरानी उपायों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

बैक्टीरिया संक्रमण दुनियाभर में बीमारी एवं मौत की आम वजह है और तरह-तरह की एंटीबायोटिक दवाओं के विकास के बावजूद बैक्टीरिया संक्रमण का पता शुरुआती दौर में लगाना एक चुनौती है। गुवाहाटी के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के अनुसंधानकर्ताओं ने बताया कि ऑर्गेनिक फील्ड इफेक्ट ट्रांजिस्टर पर आधारित उनके उपकरण की बैक्टीरिया का पता लगाने और उसके ग्राम पोजिटिव एवं ग्राम निगेटिव प्रकारों का फर्क करने की क्षमता साफ हो चुकी है। फिलहाल प्रयोगशालाओं में शरीर के स्राव से बैक्टीरिया का पता लगाया जाता है। इसमें मरीज के शरीर से कोशिकाएं ली जाती हैं। उनका कल्चर किया जाता है या उनकी वृद्धि कराई जाती है ताकि सूक्ष्मजीववैज्ञानिक विश्लेषण के लिए पर्याप्त बैक्टीरिया कोशिकाएं उपलब्ध हों।

संकलन : बबलू कुमार





दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन

अजय कालड़ा

आनन्दवन में सभी जानवर शान्ति से मिल-जुलकर रहते थे।
परन्तु सुन्दरवन से आया चिंटू चूहा बहुत शरारती था।

एक दिन चिंटू चूहे ने सोनू खरगोश की बोयी हुई गाजरों को खोद डाला जिससे सारी गाजरें खराब हो गईं। यह देख सोनू खरगोश बहुत दुःखी हुआ।



चिंकी चिड़िया ने अपना नया घर आम के पेड़ पर बनाया। एक-एक तिनका इकट्ठा कर उसने एक सुन्दर घोंसला बनाया परन्तु चिंटू चूहे ने उसका घोंसला भी तोड़ डाला।



गिटू गिलहरी ने गिन्नी गिलहरी के लिए एक सुन्दर फ्रॉक बनाई। जिसे चिंटू चूहे ने कुतर दिया। गिटू गिलहरी गिन्नी गिलहरी को फ्रॉक न दे पाई। इस कारण वह बहुत दुखी हुई।



चिंटू चूहे की शारतें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थीं। सभी जानवर उससे बहुत परेशान हो गए थे।

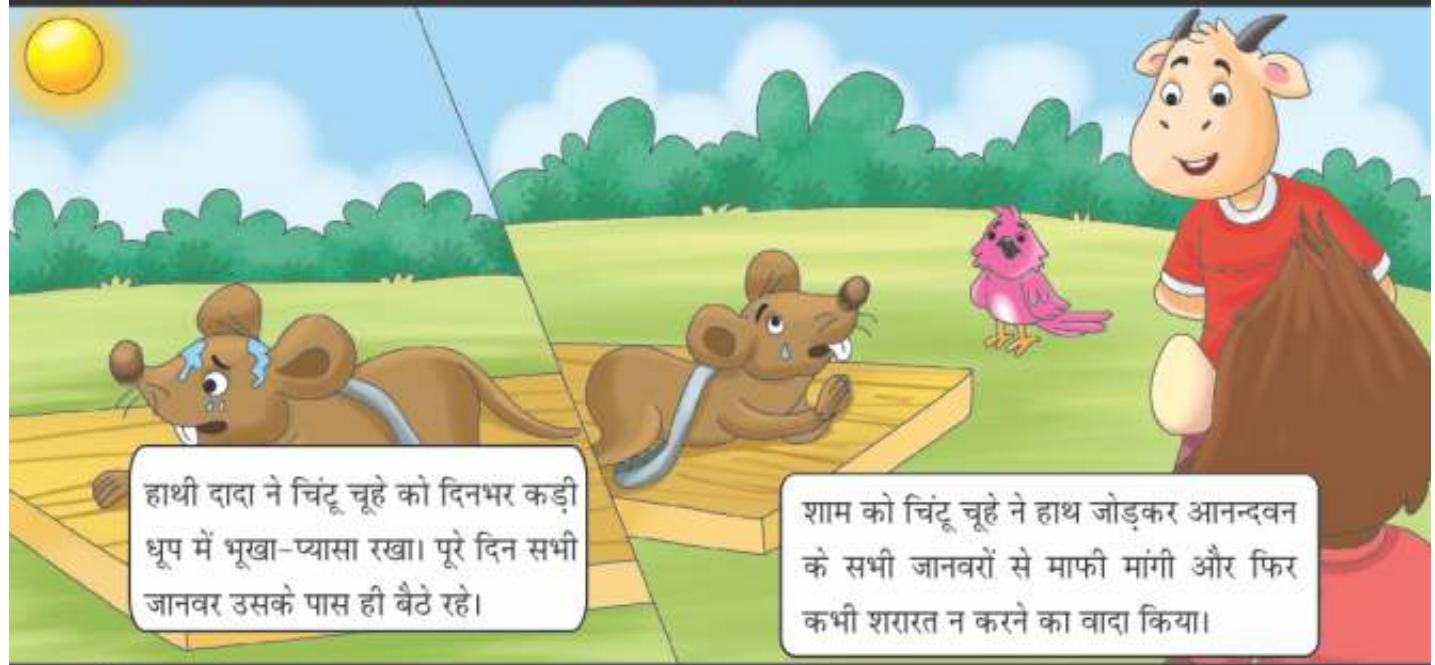
आनन्दवन में सरला बकरी ने अपनी नई-नई किराने की दुकान खोली। जंगल के सभी जानवर उद्घाटन समारोह में शामिल हुए। जैसे ही सरला बकरी ने दुकान का दरवाजा खोला। अनाज की कुत्री हुई बोरियों में से चिंटू चूहा निकलकर भागा।



तभी वहाँ हाथी दादा आ गए। चिन्तित और गम्भीर जानवरों को देखकर हाथी दादा ने उनसे उनकी उदासी का कारण पूछा।

रोते हुए सरला बकरी ने उन्हें चिंटू चूहे की सारी शरारतें एवं घटनाएं बताईं।

कुछ देर सोचने के बाद हाथी दादा ने कहा— कल चिंटू चूहे का आनन्दवन में आखिरी दिन होगा। सभी जानवरों ने एक स्वर में पूछा— वह कैसे?



विटामिन 'सी' से सुरक्षा पाइए

बच्चों, क्या तुम्हें पता है कि हमारे लिए विटामिन का कितना महत्व है? विटामिन 'सी' की कमी से स्कर्वी नामक रोग हो जाता है। इसमें त्वचा के अन्दर जोड़ों से मसूड़ों से रक्तस्राव होने लगता है अगर हम नियमित रूप से भोजन में साग, सब्जी, सलाद का प्रचुर मात्रा में प्रयोग करें तो सभी विटामिन अपने आप ही प्राप्त हो जाते हैं। आलू भी एक ऐसी सस्ती सब्जी है जिसमें विटामिन 'सी' की उपस्थिति रहती है। इसके अलावा अंकुरित चना, बंदगोभी, नींबू, संतरा, मौसमी, अनानास, चकोतरा, गुलकंद में भी विटामिन 'सी' पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहता है। हाँ, ये बात ध्यान में रखना होगा कि नये आलू में पुराने आलू की अपेक्षा तीन गुना अधिक विटामिन 'सी' रहता है और आंवला तो एक ऐसा फल है जिसे गर्म उबालने एवं सुखाने पर भी इसकी मात्रा एवं गुणवत्ता में कमी नहीं आती। अतः आंवले का हमें चटनी, मुरब्बा, आचार के रूप में भरपूर प्रयोग करना चाहिए। यदि हम नियमित रूप से विटामिन 'सी' युक्त पदार्थों का सेवन करें तो यह कैंसर रक्षक विटामिन 'सी' हमारे शरीर की रक्षा भी करता है। विटामिन 'सी' युक्त पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्तियों का शोध द्वारा यह पता किया गया कि मुँह, पेट, आहार नाल, मलद्वार, अग्नाशय, गर्भाशय, ग्रीवा तथा फेफड़े के कैंसर की सम्भावना नहीं रहती। इसके प्रयोग से सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों के प्रभाव से होने वाले त्वचा कैंसर से भी सुरक्षा की जा सकती है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

सलाद खाना क्यों जरूरी है?

बच्चों! सलाद भोजन का महत्वपूर्ण भाग है इसे खाने से कभी भी मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। ये तुम्हारे भोजन के पौष्टिक तत्वों की कमी को पूरी करता है। सलाद इसलिए उपयोगी है कि उसमें एक साथ कई फल एवं सब्जियों के पोषक गुणों का समावेश हो जाता है। यह तुम्हारे शरीर के उचित पोषण का शारीरिक ढांचे, मस्तिष्क के विकास कार्य करने की क्षमता और दीर्घ आयु पर प्रभाव डालता है। इसमें मौजूद फाइबर हमारी आंतों की सफाई भी करता है। उन क्षेत्रों में जहाँ ताजे फल और सब्जियां नहीं मिलती वहाँ चना, मूंग, मूंगफली दालों को भिगोकर अंकुरित कर लेना चाहिए। इससे इनमें पोषक तत्वों की वृद्धि हो जाती है। जिससे सलाद की कमी पूरी हो जाती है। सलाद तुम्हारे शरीर की स्थूलता को भी दूर करता है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

ये बातें भी जानने की हैं

- ★ सैंपोडिल्ला नामक पेड़ के रस को जमाकर च्यूंगम बनाया जाता है।
- ★ स्ट्रावेरी एक ऐसा फल है जिसके बीज बाहर होते हैं।
- ★ भारत में सिर्फ एक जगह हिमाचल प्रदेश के मंडी में ही 'पहाड़ी नमक' पाया जाता है।

- ★ कुछ जीव अपना रंग बदलने में माहिर होते हैं क्योंकि इनकी त्वचा में उपस्थित क्रोमेटोफोर रंगकों के कारण ऐसा होता है।
- ★ सीपी का बाह्य आवरण 'कैल्शियम कार्बोनेट' के बने होते हैं।
- ★ अल्बाट्रोस पक्षी के पंखों की लम्बाई सर्वाधिक होती है।

- प्रस्तुति : विभा वर्मा

कविता : रामअवध राम

ऋतुराज बसन्त

सर्दी का होते ही अन्त,
आया ऋतुराज बसन्त।

रंग-रंग के प्यारे-प्यारे,
खिले फूल धरा पर सारे।

पवन सुगन्थित गंध उड़ाई,
महकी धरा की अंगनाई।

गुन-गुन-गुन भौंरे गाते,
तितलियों संग मौज मनाते।

चिड़िया चहकी डाली-डाली,
कूक रही कोयल मतवाली।

धरती सारी हुई सजीली,
सरसों सजी पीली-पीली।

चहुं दिशि में मस्ती का रंग,
नयी तरंगें नयी उमंग।

सर्दी का होते ही अन्त,
आया ऋतुराज बसन्त।



बालगीत : राधेलाल 'नवचक्र'

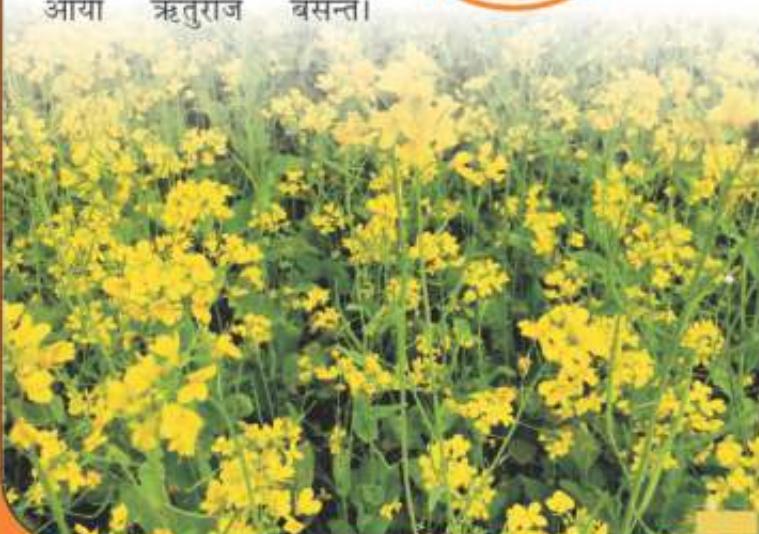
मौसम बसन्त का

काली कोयल जब भी गाती,
मीठा गीत सुरीला।

आ टपका है मौसम समझो,
फिर बसन्त की लीला॥

पीली-पीली सरसों देखो,
सभी जगह लहराई।

धरती लगती कितनी प्यारी,
मन में खुशियां लाई॥



सौम्य की इच्छा

‘बेटा, कल जल्दी उठना है।’ सौम्य की माँ सुमित्रा ने कहा।

‘क्यों मम्मी?’ सौम्य ने पूछा।

मम्मी बोली— ‘गाँव चलना है। तुम्हारे स्कूल की भी चार-पाँच दिन की छुट्टियाँ हैं।’

‘अरे हाँ... गाँव मतलब दादा-दादी के पास जाना है।’ सौम्य ने खुश होते हुए कहा।

सुबह की पहली बस से सौम्य के पापा सुमित, उसकी मम्मी और वह गाँव के लिए निकल गये। गाँव के निकट पहुँचते ही हरे-भरे खेत नजर आने लगे। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली देखकर सौम्य का मन पुलकित हो गया। ऊँचे-ऊँचे पेड़ और उन पर चहचहाते पंछी उसका मन मोह रहे थे। उसने पापा से पूछा— ‘पापा यहाँ का वातावरण कितना अच्छा है। अपने शहर में तो सिर्फ कंकरीट के जंगल और काला धुँआ ही दिखाई देता है। ऐसा क्यों?’

‘बेटा शहरों में जगह की कमी के कारण ऊँची-ऊँची इमारते हैं और कारखानों के धुँए से प्रदूषण बढ़ रहा है।’

सौम्य ने फिर पूछा— ‘फिर हम लोग वहाँ क्यों रहते हैं? हमें तो अपने गाँव में ही रहना चाहिए।’

पापा ने कहा— ‘गाँव में रोजगार के साधन कम हैं। मैं भी तो रोजगार की तलाश में शहर आ गया था।’

तभी बस के कंडक्टर ने आवाज लगाई— ‘सोमपुर... सोमपुर...।’ सोमपुर सौम्य के गाँव का नाम था। वे फटाफट बस से उतर गये। बस से उतरते ही एक आदमी ने कहा— ‘सुमित भैया नमस्ते...।’

‘नमस्कार रमण भैया... ठीक हो।’— सुमित ने कहा।

सौम्य ने पूछा— ‘ये कौन हैं पापा... क्या यहाँ सब आपको जानते हैं?’

‘हाँ बेटा गाँव की यही तो खासियत है कि सब एक-दूसरे को जानते हैं। तभी तो यहाँ का माहौल परिवार जैसा है।’

‘काश... शहरों में भी ऐसा होता। वहाँ तो लूट-खसोट दादागिरी।’— सौम्य ने मन ही मन कहा।

कुछ दूर चलने के बाद सौम्य के दादा जी का घर आ गया। उसके दादा-दादी ने उन्हें देखते ही अपनी बांहों में भर लिया। सबकी आँखें छलक उठी खुशी के मारे। सौम्य को देखकर दादा जी ने पूछा— ‘कैसा लगा गाँव बेटा?’

‘अरे दादा जी पूछो मत... आज तो हरियाली देखकर मजा आ गया।’— सौम्य ने झूमते हुए कहा। थोड़ी देर में चाय की जगह दूध और कोल्ड ड्रिंक की जगह ठंडी-ठंडी छाछ मिली तो वह हैरान रह गया।

शाम होते-होते अचानक सौम्य की तबियत खराब हो गयी। शायद थोड़ी ठंड लग गयी थी। दादा जी ने तुरन्त एक गर्मागर्म दूध का काढ़ा तैयार कर उसे पिला दिया। सुबह को सौम्य बिल्कुल ठीक हो



गया। ‘वाह... दादा जी ये कौन सी दवा दी जो रात भर में मैं ठीक हो गया।’ सौम्य ने हँसते हुए पूछा। दादी जी ने बीच में ही टोकते हुए कहा— ‘ये तेरे दादा की देशी दवा है बेटा।’

ये सुन सब हँसने लगे। दिनभर खेत-खलिहानों में सौम्य घूमता रहा। सौम्य के दो-चार दिन कैसे बीते उसे पता नहीं चला।

अचानक सौम्य के दादा जी को ‘हार्ट-अटैक’ आ गया। उन्हें तुरन्त गाड़ी से शहर लाया गया। सौम्य भी साथ आ गया। उसका मन उदास देखकर पापा ने कहा— ‘बेटा चिंता मत करो दादा जी ठीक हो जाएंगे।’

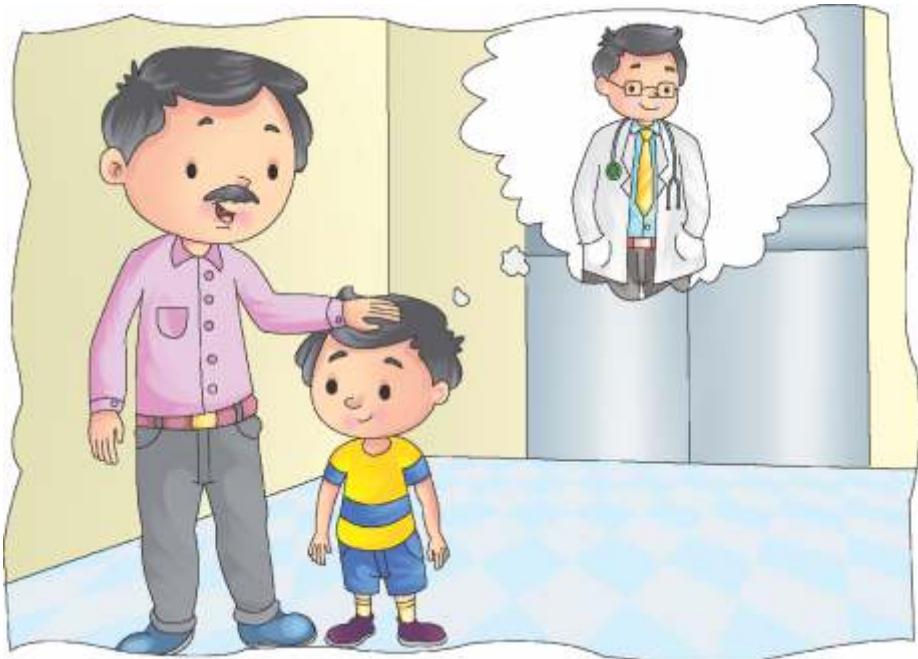
‘पापा मुझे गाँव में एक-दो बातें खराब लगीं।’— सौम्य ने कहा।

‘कौन सी बातें सौम्य?’ सुमित ने पूछा।

सौम्य ने पापा का हाथ पकड़कर कहा— ‘पहले आप वादा करो कि मैं जो आप से मांगूंगा वो आप देंगे।’

‘बोलो बेटा... जो देने लायक होगा वही दे पाऊँगा।’ सुमित ने जवाब दिया।

वह बोला— ‘दादा जी गाँव की इतनी तारीफ करते थे लेकिन उन्होंने कभी नहीं बताया कि गाँव में कोई अस्पताल और बड़ा स्कूल नहीं है। आज अस्पताल होता तो उनको शहर लाना नहीं पड़ता तथा इलाज जल्द मिल जाता। शायद पढ़ने के लिए भी यहाँ के बच्चे दूसरे गाँव जाते होंगे।’



‘हाँ बेटा, यहाँ अस्पताल के नाम पर छोटा सा स्वास्थ्य केन्द्र व स्कूल के नाम पर प्राइमरी स्कूल है। वो भी डॉक्टरों और टीचर्स की कमी के कारण बंद ही रहते हैं।’ ये सब छोड़... चल अब बोल तू क्या वादा लेना चाहता था मुझसे।’ उसके पापा ने पूछा।

सौम्य ने सिर झुकाकर कहा— ‘पापा मैं बड़ा होकर डॉक्टर बनना चाहता हूँ।’

‘ये सोच बड़ी अच्छी है लेकिन...।’ पापा बात पूरा कर पाते उससे पहले ही सौम्य बोल पड़ा— ‘डॉक्टर बनकर मैं गाँव के अस्पताल में नौकरी करूँगा।’

थोड़ा सोचने के बाद पापा ने कहा— ‘पक्का बेटा... तुम जो चाहोगे वैसा ही होगा।’ उनकी बातों को सुन मम्मी भी बोल पड़ी— ‘बेटा, भगवान् तुम्हारी इच्छा पूरी करो।’

धीरे-धीरे दादा जी बिल्कुल ठीक हो गये। जब उनको सौम्य की इच्छा का पता चला तो उन्होंने उसे गले से लगा लिया और वे मन ही मन बुद्धिदाए— ‘काश! मेरे देश के सब बच्चों की सोच मेरे सौम्य जैसी हो जाए तो गाँव भी एक दिन शहर बन जाएं।’

ताजे पानी की रंग-बिरंगी सुन्दर मछली : अग्निमुख मछली

अग्निमुख मछली ताजे पानी की एक सुन्दर मछली है। यह सिकलीडाई परिवार की सबसे सुन्दर मछली मानी जाती है। अंग्रेजी में इसे फायर फिश कहते हैं। अग्निमुख मछली के मुँह के नीचे, आगे और भीतर का रंग जलती हुई आग जैसा नारंगी होता है। अतः इसे यह नाम दिया गया है।

अग्निमुख मछली अमरीका में ग्वाटेमाला और यूकेटन की नदियों में बहुतायत से मिलती है। अग्निमुख मछली की शारीरिक संरचना ताजे पानी की सामान्य मछलियों की तरह होती है। यह छोटे आकार की रंग-बिरंगी सुन्दर मछली है। अग्निमुख मछली की लम्बाई 8 सेंटीमीटर से लेकर 12 सेंटीमीटर तक होती है किन्तु कभी-कभी 15 सेंटीमीटर लम्बी अग्निमुख मछलियां भी देखने को मिल जाती हैं। अग्निमुख मछली का सर बड़ा तथा पीठ ऊँची होती है। इसका मुँह काफी चौड़ा होता है एवं इसके भीतर का अधिकांश भाग आग जैसे नारंगी रंग का होता है। इसकी आँखें बड़ी होती हैं तथा इनके किनारे सफेद होते हैं। अग्निमुख मछली के शरीर का अधिकांश भाग ग्रे पन लिये हुए नीले रंग का होता है एवं इस पर बैंगनी रंग की चमक होती है। इसकी पीठ और ऊपर के रंग इसके शरीर के मांसल भागों के रंगों से अधिक गहरे होते हैं। अग्निमुख मछली के शरीर के अधिकांश मांसल भागों पर गहरे रंग के पट्टे भी होते हैं। इसके शरीर पर शल्क होते हैं एवं शल्कों के किनारे लाल रंग के होते हैं। इसके पेट और गर्दन का रंग चटक नारंगी होता है। इस प्रकार अग्निमुख मछली का पूरा शरीर लाल, नीले और नारंगी रंग के जाल से

ढका हुआ-सा लगता है। अग्निमुख मछली की एक प्रमुख विशेषता यह है कि पर्यावरण एवं परिस्थितियों के अनुसार इसके शरीर के रंग बदल जाते हैं।

अग्निमुख मछली एक सुस्त और आलसी मछली है। यह सिकलिड परिवार की अन्य मछलियां की तरह भोजन की तलाश में अपने निवास से अधिक दूर नहीं जाती। अग्निमुख मछली अपना अधिकांश समय नदी तल की रेत अथवा मिट्टी में पड़े-पड़े व्यतीत करती है। यह मांसाहारी मछली है किन्तु अच्छी शिकारी मछली नहीं है। अग्निमुख मछली का प्रमुख भोजन सागर तल के पास पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के कीड़े-मकोड़े हैं। यह सामान्यतया अपने आसपास तैरते हुए इसी प्रकार के जीवों का शिकार करती है। कभी-कभी अग्निमुख मछली नदी तल की रेत अथवा मिट्टी खोदकर शिकार की तलाश करती है। नदी के तल की रेत अथवा मिट्टी खोदते समय यह सर के बल उल्टी खड़ी हो जाती है और अपना मुँह तल के पास ले आती है। जब इसे कोई शिकार नहीं मिलता तो यह नदी के तल की रेत अथवा मिट्टी अपने मुँह में भर लेती है और इसे चबाती है। अग्निमुख मछली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह रेत अथवा मिट्टी के जीवों को तो खा जाती है किन्तु अखाद्य पदार्थों को बड़ी सफाई से मुँह के बाहर निकाल देती है। कभी-कभी अग्निमुख मछली नदी के तल की रेत अथवा मिट्टी का भोजन करते हुए लगभग 30 सेंटीमीटर आगे बढ़ जाती है और फिर अपनी छाती के मीनपंखों की सहायता से

वापस लौटती है। वापस लौटते समय यह अखाद्य पदार्थों से युक्त रेत और मिट्टी को अपने मुँह से बाहर निकालती जाती है।

नर और मादा अग्निमुख मछली प्रजनन के पूर्व नदी तल की रेत पर अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग गढ़े तैयार करते हैं। इनके गढ़े सीमा क्षेत्र के भीतर ही होते हैं। ये गढ़े एक-दूसरे से अधिक दूर नहीं होते। मादा अग्निमुख मछली अपने द्वारा खोदे गये गढ़े पर विशेष ध्यान देती है तथा उपयुक्त स्थान न होने पर दूसरा गढ़ा तैयार करती है। अपनी पूरी तैयारी कर लेने के बाद मादा अपने द्वारा खोदे गये गढ़े में अंडे देती है। इसका प्रत्येक अण्डा गढ़े की सतह से चिपकता जाता है। इस समय नर अपने द्वारा खोदे गये गढ़े में मादा के पास ही बैठा रहता है। जैसे ही मादा अग्निमुख मछली अंडे देती है, नर उसके अंडों के पास जाता है और उन पर शुक्राणु छिड़क कर उन्हें निषेचित कर देता है।

अग्निमुख मछली के अंडे परिपक्व हो जाने पर फूटते हैं और उनसे छोटे-छोटे बच्चे निकल



आते हैं। इसके नवजात बच्चे प्रायः जन्म देने वाली अग्निमुख मादा के पीछे-पीछे तैरते रहते हैं किन्तु कभी-कभी इन्हें नर के पीछे भी तैरते हुए देखा गया है। नवजात बच्चों को लगभग 15 दिन तक रंगों की पहचान नहीं होती। इसके बाद ये अग्निमुख मछली के मुँह के भीतर के और मुँह के आसपास के रंगों को पहचानने लगते हैं तथा इन्हीं रंगों को देखकर नर अथवा मादा का पीछा करते हैं। वयस्क हो जाने पर ये नदी के तल में किसी सुरक्षित स्थान की तलाश करते हैं और वहीं अपना सामान्य जीवन आरम्भ करते हैं।

...

अपनाने योग्य बातें

- तीन के लिए मर मिटो – देश, सद्धर्म, मित्र।
- तीन बातें मत भूलो – सद्गुपदेश, उदारता, उपकार।
- तीन का संग्रह करो – अच्छी पुस्तकें, अच्छे मित्र, अच्छे कार्य।
- तीन का सामना करो – शत्रु, अत्याचार, संकट।
- तीन से हमेशा दूर रहो – आलस्य, खुशामद, बकवास।
- तीन के गणु गाओ – उपकार, ज्ञान, दान।

बच्चों के अपनाने योग्य बातें

- अच्छे नागरिक बनना।
- व्यवहारिक जीवन में सुधार लाना।
- हर एक के दुःख दर्द में काम आना।
- माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी सेवा करना।
- माता-पिता की कमाई के मुताबिक खर्च करना।
- मानव मात्र से प्यार करना।

सुन्दरता का घमण्ड

काननवन में टीटू नाम का एक तोता रहता था। वह बहुत सुन्दर था। टीटू अपनी सुन्दरता के कारण अन्य पंछियों से दूर रहता था।

एक दिन टीटू आसमान में उड़े रहा था। उसे उड़ता देख नीलू कबूतर ने पूछा— क्यों टीटू, नजर बचाकर कहाँ उड़े जा रहे हो?

—मैं तुम जैसे भद्रे कबूतरों के मुँह नहीं लगता।— टीटू ने तपाक से कहा।

नीलू कबूतर अपमानित होकर रह गया। अगले दिन टीटू अमरुदों के बाग में मीठे-मीठे अमरुद खाने में लगा था। तभी कोयल आ गई। कोयल को देखकर भी टीटू अपना पेट भरने में लगा रहा। कोयल ने पूछा— अरे टीटू जी, बहुत बड़े हो गये हो क्या?



‘नमस्ते’, ‘हैलो-हाय’ भी नहीं करते? क्यों भई ऐसी भी क्या नाराजगी?

टीटू बोला— मैं तुम जैसी काली-कलूटी से बातचीत नहीं करता।

कोयल को टीटू का उत्तर सुनकर बड़ा गुस्सा आया किन्तु वह उसके मुँह लगना नहीं चाहती थी इसलिए कुछ नहीं बोली।

उसी शाम को कोयल और नीलू कबूतर ने जब कालू कौए को टीटू की हरकतों के बारे में बताया तो उसे यकीन नहीं हुआ। वह उससे मिलने टीटू के घर पहुँच गया। ‘टीटू घर में हो क्या?’ कालू ने आवाज लगाई।

तोते की पत्नी बाहर आकर बोली— वे तो सैर करने आमों के बाग की तरफ गये हैं।

कालू कौआ वापस उड़े चला। थोड़ी-सी उड़ान के बाद उसे लगा कि टीटू की पत्नी झूठ बोल रही है। वह फुर्र से टीटू के घर फिर आ गया। सचमुच टीटू घर में ही आराम कर रहा था। कौए को यह दृश्य देखकर क्रोध आ गया। उसने टीटू से कहा— अरे, घर में होकर भी अपने आपको घर में न होने की झूठी बात कहता है। तुम्हें शर्म नहीं आती क्या?

—तुम्हें मुझसे क्या काम है?— टीटू ने इतराकर पूछा।

—मैंने सुना है कि तुम अपने आपको बड़ा सुन्दर पंछी समझते हो और दूसरे परिन्दों को कुरुप। इसलिए किसी से बातचीत भी नहीं करते।— कालू ने उसे डांटते हुए कहा।

—मैं अपने आपको सुन्दर पंछी समझता ही नहीं हूँ बल्कि वास्तव में मैं तुम सबसे सुन्दर हूँ। तुम्हारी तरह मेरी चोंच काली नहीं है और न ही तुम जैसा मेरा काला शरीर है। देखो मेरी लाल चोंच। गले में धारीदार माला और हरे-हरे सुन्दर पंख।— टीटू ने अपनी सुन्दरता का बखान करते हुए कहा।

कालू कौआ समझ गया कि सचमुच टीटू को अपनी सुन्दरता पर बहुत घमण्ड हो गया है। वह चुपचाप वहाँ से अपने घर लौट आया। अगले दिन कालू ने सभी पंछियों की बैठक बुलाई। बैठक में

चील, गिछ्द, चिड़िया, कोयल, कबूतर, उल्लू और मोर आदि मौजूद थे। कोयल ने टीटू तोते को काननवन में रंग और नस्लभेद फैलाकर एकता को तोड़ने वाला पंछी बताते हुए कहा— टीटू को अपनी बिरादरी से बाहर निकाल देना चाहिए।

नीलू कबूतर ने कहा— टीटू काननवन में नस्लवाद व रंगभेद नीति को बढ़ावा दे रहा है। अतः उसके खिलाफ कठोर कदम उठाने की आवश्यकता है।

अन्त में कालू कौए ने एक प्रस्ताव पढ़कर सभी को सुनाया— जिसमें लिखा था कि ‘टीटू हमारी एकता व अखण्डता के लिए धातक है। वह रंगभेद व अलगाववाद की विचारधारा पर चल रहा है। अतः उसे काननवन की बिरादरी से निष्कासित किया जाता है।’ टीटू को जब यह पता चला तो वह और अधिक खुश हुआ।

एक दिन काननवन में कुछ शिकारी जाल लेकर घुस आए। उनका उद्देश्य रंग-बिरंगे सुन्दर पक्षियों को पकड़कर बेचना था। एक शिकारी की नजर टीटू पर पड़ी। वह उसकी सुन्दरता से बड़ा प्रभावित हुआ। उस शिकारी ने तुरन्त टीटू को पकड़ने की योजना बनाई। टीटू शिकारी की इच्छा समझ गया और फुर्र से उड़ गया। शिकारी भी उसके पीछे-पीछे दौड़ता रहा।

अचानक चारों तरफ जाल बिछा दिया गया। टीटू उड़ता-उड़ता थक चुका था। टीटू जाल में फँसने वाला ही था कि उसे कालू कौए का घर दिखाई दिया। वह झट उसमें घुस गया। कालू ने जब टीटू को देखा तो वह गुस्से में बोला— अरे सुन्दर पंछी कालू-कलूटे के घर में क्यों घुस आया। चल निकल...।

—जरा मेरी बात तो सुनो कौए दादा।— हाँफते हुए टीटू ने कहा।



—मैं कुछ नहीं सुनना चाहता।— कालू ने कहा। टीटू ने पैर पकड़ लिए और बोला— मेरे पीछे एक शिकारी बुरी तरह से पड़ा है। मैं यहाँ से उड़ा तो वे मुझे जाल में फँसा लेंगे और पिंजरे में बन्द कर शहर में बेच देंगे। मुझे क्या पता था कि मेरी सुन्दरता ही मेरी दुश्मन बन जायेगी। आप बड़े दयालु हैं दादा मुझ पर रहम करो। मैं अपने द्वारा किये व्यवहार से आज शर्मिन्दा हूँ।— टीटू बोलते-बोलते रोने लगा।

कालू कौए को दिया आ गई। वह बोला— ठीक है तुम यही ठहरो, मैं बाहर जाकर देखता हूँ।— टीटू ने राहत की सांस ली। कालू कौआ अपने परिवार के साथ बाहर निकला तो शिकारी कौए को देखकर वहाँ से लौट गया। कौए ने अपने सभी साथी परिन्दों को तुरन्त अपने घर बुलवा लिया। थोड़ी ही देर में सब जमा हो गये। कौए ने टीटू की सारी कहानी उनको बता दी। सभी पंछियों ने टीटू पर तरस खाते हुए उसे माफ कर दिया।

टीटू ने भी सभी से शीश झुकाकर क्षमा मांगी। इतना ही नहीं उसने काननवन के नियमों पर चलना स्वीकार कर लिया और सभी के साथ घुल-मिलकर रहने की कसम उठाई। उसके सिर से सुन्दरता का भूत अब उतर चुका था।

आलेखा : कमल सौगानी

भेड़िया की गजब शक्ति है, सूंधने और सुनने की...

भेड़िया जंगल का एक धूर्त जानवर है। यह धोखे और चालाकी के साथ अपना शिकार करता है। यूं यह उत्तरी गोलार्द्ध का मूल प्राणी है, यही से इसके बंश दुनिया के बीहड़ जंगलों में फैले। भिन्न-भिन्न देशों में इसका रंग रूप भी कुछ अलग होता है। इसकी 18-20 प्रजातियां इसी से मिलती-जुलती हैं लेकिन चेहरे की बनावट कुछ भिन्न होती है। इस प्राणी के संदर्भ में एक दिलचस्प बात तो यह है कि यह बोलता है, दूर से सुनने पर कुछ ऐसा लगता है जैसे कोई देहाती मनुष्य अपनी भाषा में बोल रहा हो।

यह प्राणी कुत्तों के साथ भी मजे से रहता है। लेकिन धीरे-धीरे यह कुत्तों के झुंड में रहकर भाँकना भी अच्छी तरह सीख लेता है।

भेड़िया एक शिकारी प्राणी है। यह अपनी पूरी रफ्तार से शिकार का पीछा कर उसकी गर्दन दबोच लेता है।

इसकी सूंधने, सुनने और देखने की शक्ति अच्छी होती है। यह हर्ष, दुख, भय आदि भावनाओं को अपनी आवाज द्वारा प्रकट करता है। अपने समूह में किसी भेड़िये की मौत होने पर यह रोने जैसी आवाज में भाँकता है तथा 8-10 घंटे तक किसी तरह का शिकार नहीं करता। अधिक गम होने के कारण यह नींद निकाल लेता है। फिर गम की बात को भूलकर शिकार पर निकल पड़ता है। यह मरा जानवर खाना पसन्द नहीं करता। आलस्य व मुसीबत के कारण ही मरे हुए शिकार को कुरेदता है। यह अन्धेरी रात में चालाकी से शिकार करता है।

चूंकि यह एक लोभी और शिकारी प्राणी है। इस कारण अपने शिकार की तलाश में रात-दिन भटकता रहता है। पेट भरा होने पर भी यह शिकार कर लेता है और उसे छोड़कर आगे बढ़ लेता है।

इसकी मादा एक बार में 5 से 8 बच्चों को जन्म देती है। इसका गर्भकाल औसतन 9 सप्ताह का होता है। अनेक मादा भेड़िया एक ही स्थान पर एक साथ बच्चे जनना पसन्द करती हैं। बच्चों के कुछ बड़े होने तक वह दूध पिलाती हैं व अन्य हिंसक जानवरों से उनकी रक्षा करती हैं। कई खूंखार भेड़िये अपने नवजात शिशुओं को ही चटकर जाते हैं। इस कारण मादा नाराज होकर भेड़िये को नोंचकर लहुलुहान कर देती हैं।

यह इतना धूर्त प्राणी है कि महिला की गोद से उनके बच्चे को भी छीनकर भाग जाता है।



बाल कविता : राजेश पुरोहित

लो आया बसन्त

मौसम बदला जाड़ा भागा,
लो अब आया बसन्त।
डाल-डाल और पात-पात,
सजा-धजा आया बसन्त॥

पीली ओढ़नी सरसों पहने,
आम बेर पर छाया बसन्त।
फल-फूलों से पेड़ लदा,
मौसम भाया यह बसन्त॥

देरों अमरुद सबने खाया,
भौंग लेकर आया बसन्त।
कोयल ने गीत गाया,
खुशियां ले आया बसन्त॥

नई महक लेकर आया,
नव उमंग संग आया बसन्त।
तितली ने नाच दिखाया,
फूलों ने महकाया बसन्त॥



कविता : गणेश 'चंचल'

पेड़ और पर्यावरण

अब पर्यावरण बचाओ, मत पेड़ों को कटवाओ।
हैं पेड़ हमारे जीवन, सम्भवतः और लगाओ।
पेड़ों के कट जाने से, है घटा न जल बरसाती।
वर्षा के कम होने से, धरती बंजर हो जाती।

जब कमी अन्न की होगी, तब हम सब भूख मरेंगे।
फिर हाहाकार मचेगा, जग में अपराध बढ़ेंगे।
हैं वृक्ष हमें फल देते, देते हैं छाया शीतल।
फूलों से भर आते हैं, धरती के सूने आंचल।

पेड़ों पर पक्षी करते हैं, अपना रैन बसेरा।
मीठे संगीत सुनाते, होता है जभी सवेरा।
इसलिये धरा पर भाई, तुम अनगिन पेड़ लगाओ।
अब पर्यावरण बचाओ, मत पेड़ों को कटवाओ।





जानकारीपृष्ठी लेख : अंकुश जैन

रंगीन संसार तितलियों का

मनभावन रंग-बिरंगी तितली देखते ही सबका मन प्रफुल्लित हो उठता है। यह छोटा-सा जीव अपने आर्कषक, चमकदार चटख रंगों से सजा हुआ जब खूबसूरत फूलों पर मंडराता है तो बच्चों के साथ-साथ बड़ों का मन भी उसे पकड़ने के लिए लालायित हो उठता है।

जीव-जगत के 'लेपीडाप्रेटा' समूह में तितलियों को रखा जाता है। इस समूह में कुल एक लाख चालीस हजार प्रकार की प्रजातियों में से अधिक हिस्सा शलभ अथवा मॉथ के रूप में पाया जाता है तथा तितलियों की कुल जातियों की संख्या 25000 के करीब पाई जाती है।

तितली का जन्म एक प्रकार के 'केटरपिलर' से होता है। एक बार अण्डों से बाहर निकलने के पश्चात ये केटरपिलर पत्तों को चबाना शुरू कर देते हैं। पालिफेमस मॉथ के लार्वा को दुनिया का सर्वाधिक पेटू जीव कहा जाता है। उत्तरी अमरीका में पाये जाने वाला यह लार्वा अपनी जिन्दगी के प्रथम 48 घंटों में

ही अपने वजन से 86000 गुना भोजन चट कर जाता है। तौबा-तौबा! कितना पेटू जीव होता है यह। अगर यही तुलना हम एक सात पौंड वाले नवजात शिशु से करें तो इसका मतलब यह होगा कि बच्चा सिर्फ दो दिन में 301 टन भोजन अपने पेट में डाल ले।

आगे पढ़ने से पहले मॉथ और तितली का फर्क भी जान लें। इन दोनों जीवों में हमें भ्रम नहीं होना चाहिए। एक ही समूह में रहते हुए भी इनकी दिनचर्या अलग-अलग होती है। मॉथ या शलभ के शरीर पर बाल होते हैं। इसका शरीर भी तितली की अपेक्षा अधिक मजबूत होता है। तितली दिनचर होती है जबकि मॉथ अधिकतर रात्रिचर होते हैं।

ग्रेट ब्रिटेन एवं केनरी द्वीप समूह में पाया जाने वाला स्टेन्ट्यून तथा स्टिगमेला रिडिक्यूलोसा शलभ मात्र 0.08 इंच लम्बा-चौड़ा होता है। 'पिग्मी ब्लू' नामक तितली जो उत्तरी अमरीका में पाई जाती है; के पंखों की चौड़ाई भी सिर्फ 0.55 इंच होती है। यह विश्व की सबसे छोटी तितली है। इसके विपरीत 'क्वीन एलेक्जेंड्रा बर्ड विंग' नामक तितली सबसे बड़ी होती है। पपुआ न्यूगिनी में पाई जाने वाली इस तितली के एक पंख से दूसरे पंख तक की चौड़ाई 11 इंच से अधिक होती है।

सोलोमन द्वीप समूह में पाई जाने वाली अनिथोप्टेरिया अलोरिया नामक तितली की प्रजाति दुनिया में बहुत कम पाई जाती है। इसकी सिर्फ बारह जातियां ही मिलती हैं।





तितलियों की ग्राण-शक्ति बड़ी तीव्र होती है। इनकी दूर की दृष्टि भी जीव जगत में बहुत अधिक है। ये नौ फीट की दूरी तक देख सकती हैं। तितलियों को अपना प्रिय भोजन मकरंद प्राप्त करते समय कोई अन्य जनु इन्हें मार कर खा नहीं जाए। इसलिए प्रकृति ने इन्हें कुछ विशेष रंग भी प्रदान किये हैं। 'डेड लीफ' तितली के पंख फैले होने पर चटकीले रंगों से युक्त दिखाई देते हैं किन्तु समेटने पर यह एक मुरझाई पत्ती जैसी दिखाई देती है। इसका शिकारी जनु इसे मात्र एक पत्ती जानकर आगे बढ़ जाता है। कुछ तितलियों के पंखों के पीछे की तरफ दो काले धब्बे होते हैं जो शत्रु को आंख की तरह दिखाई पड़ते हैं। जब शत्रु इस झूली आंख पर आक्रमण करता है तो उसे अपनी असली आंख से देख लेती है और बचकर भाग निकलती है। 'ब्लाउडेड यलो' नामक तितली इस प्रकार अपना बचाव करती है।

प्राकृतिक शत्रु से तितली अपना बचाव कर सकती है परन्तु मानव अपने स्वार्थ के लिए इनका विनाश करने पर तुला है। कितना अच्छा हो अगर हम तितली को पकड़कर संजोने के बजाए उसे स्वच्छ विचरण करने दें।



प्रेरक-प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

कोयल और बगुला

फागुन का महीना था।

बसन्त ऋतु थी। आम के एक पेड़ पर बैठकर सुबह-सुबह कोयल कुह... कुह... गा रही थी।

कोयल की मीठी और सुरीली आवाज सुनकर एक बगुला उसके करीब आ पहुँचा। फिर झट बोला—“कोयल बहन, तुम्हारी आवाज में तो बहुत मिठास है।”

“तो फिर?”

“मगर तुम्हारी सूरत तो काली है। भगवान ने सचमुच बड़ी गलती की है।” बगुला बोला।

“कैसी गलती?” कोयल उत्सुक हो उठी।

“जैसी तुम्हारी सूरत है, आवाज भी वैसी ही होनी चाहिए।” बगुला ने आगे कहा, “देखो, मैं कितना गोरा-चिट्ठा हूँ, सफेद झकझक। तुम्हारी सुरीली आवाज तो मुझे मिलनी चाहिए।”

“बगुला भाई, एक बात कहूँ?” कोयल बोली।

“जरूर कहो।”

“भगवान ने जो कुछ किया है, ठीक ही किया है। उसने कोई गलती नहीं की है।”

“कैसे नहीं की है?” कोयल की बात मानने के लिए बगुला एकदम तैयार नहीं था।

“जरा सोचो, तुम्हारा रंग उजला है तो तुम्हें उसका कितना घमण्ड है।” कोयल समझाकर बोली, “अगर तुम्हारी आवाज भी सुरीली और मीठी होती तो तुम्हारा घमण्ड क्या और नहीं बढ़ जाता? सदैव याद रखो, घमण्डी की अच्छी आवाज भी भद्री हो जाती है। उसका अच्छा रूप भी खराब लगने लगता है। अतएव भगवान ने तुम्हें जैसी भी आवाज दी है, ठीक है। खूब सोच-विचार कर दी है, ऐसा समझ लो।” कोयल की बातों में गहरी सच्चाई थी। सुनकर बगुला के मुँह की बोली बन्द हो गयी।



जानकारीपूर्ण लेख : अंकुर श्रीश्रीमाल

मगरमच्छ का रिश्तेदार है— घड़ियाल

घड़ियाल सरीसृप वर्ग का सबसे बड़ा जीव है। यह गोविएलिस वंश का मगरमच्छ का सम्बन्धी है। इसमें और मगरमच्छ में काफी अन्तर होता है। इसका थूथन मगरमच्छ की तरह छोटा न होकर काफी पतला और लम्बा रहता है। नर घड़ियाल के वयस्क होने पर इसके सिरे पर, थूथन के ऊपर एक गोल गेंद-सा भाग बन जाता है जिसे तंबी कहते हैं।

घड़ियाल सिर्फ भारत के उत्तरी इलाकों की बड़ी और उनकी सहायक नदियों में पाये जाते हैं। एक समय में यह दक्षिण पूर्व एशिया में बहुतायत से होते थे लेकिन इनके अंधाधुंध शिकार और परिस्थितियों के बदलाव के कारण अब ये लुप्त हो चुके हैं। इसकी कीमती खाल ही इसके शिकार का मुख्य कारण है। एक बार तो इनकी जाति भारत से भी लुप्त होने के कगार पर ही आ गई थी।

1975 में भारत में केवल 100 के करीब घड़ियाल बचे रह गये थे। तब भारत और पाकिस्तान की सरकारों ने मिलकर इसे बचाए रखने के लिए इसके शिकार और निर्यात पर पाबंदी लगा दी। इस जीव की रक्षा के लिए उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश की सरकारों ने घड़ियाल अभ्यारण परियोजनाएं शुरू की। ओडिशा में नंदन कानन घड़ियाली सेंचुरी बनाकर इसके अस्तित्व को बचाया गया।



सामान्यतः घड़ियाल की लम्बाई तीन मीटर से लेकर 4.5 मीटर की होती है, पर कभी-कभी 6 मीटर लम्बे घड़ियाल भी पाये जाते हैं। इनके शरीर का ऊपरी भाग जैतूनी रंग का होता है जो उम्र के साथ-साथ गाढ़े रंग का होता जाता है। इसके नीचे का हिस्सा सफेद रहता है।

घड़ियाल की त्वचा बहुत कड़ी और मजबूत होती है जो देखने में चारखाने की तरह दिखलाई पड़ती है। इनके शरीर के ऊपर की चमड़ी करीब आधा सेंटीमीटर मोटी होती है जिसके नीचे हड्डियों की तह रहती है। इसके निचले हिस्से की चमड़ी मोटी और मजबूत होती है। यह काफी कीमती होती है। इसके सूटकेस, पर्स, जूते आदि बनते हैं।

घड़ियाल के लम्बे थूथन में हर तरफ की पंक्ति में 26 से 30 दांत रहते हैं। ये दांत लम्बे सुई जैसे तेज और तीखे होते हैं। किसी शिकार को पकड़कर घड़ियाल जब मुँह बंद करता है तो ये दांत उसके शरीर को बेध देते हैं फिर शिकार घड़ियाल के मुँह से निकल नहीं सकता।

घड़ियाल की आँखें उभरी हुई रहती हैं, जिन पर एक प्रकार की पारदर्शी झिल्ली रहती है। पानी के भीतर जाने पर झिल्ली आँखों पर आ जाती है जिससे ये पानी में भी आसानी से देख सकते हैं।

इसकी अंगुलियां कुछ दूर तक आपस में जुड़ी रहती हैं और टांगों पर कुछ हिस्सा रीढ़-सा उठा हुआ रहता है। इसकी सूंधने और सुनने की शक्ति बहुत तेज होती है। दिन में ये अक्सर नदियों के किनारे धूप संकते दिखाई दे जाते हैं। शाम को ये शिकार पर निकलते हैं। ये मगर की तरह हिंसक नहीं होते ये मनुष्यों और जानवरों पर हमला नहीं करते पर जरूरत पड़ने पर ये अपनी दुम से घातक प्रहार कर सकते हैं। ये छोटे आकार की मछलियां, मेढ़क आदि खाते हैं।

यह भी जानें

- ★ विश्व में कौन सा देश है जिसमें सर्प नहीं पाये जाते?
- ▶ हवाई द्वीप में।
- ★ विश्व की सबसे बड़ी लाइब्रेरी।
- ▶ लेनिन लाइब्रेरी (मास्को)।
- ★ विश्व का कौनसा जन्तु है जो जिन्दगी भर बिना पानी पिये जीता है?
- ▶ कंगारू रैट (अमेरिका में)।
- ★ विश्व की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री कौन है?
- ▶ वेलनटीना तेरेशकोवा।
- ★ विश्व का कौनसा देश है जो कपड़े पर अखबार निकालता है?
- ▶ स्पेन।
- ★ विश्व की कौनसी मछली है जो बच्चों को जन्म देती है तथा दूध पिलाती है?
- ▶ सील व्हेल मछली।
- ★ विश्व का कौनसा पदार्थ है जो आग से नहीं जलता?
- ▶ एस्बेस्टस।
- ★ विश्व का पहला रिवाल्वर कब और किसके द्वारा बनाया गया है?
- ▶ सन् 1835, यू.एस.ए., कोल्ट द्वारा।
- ★ वह कौनसा पक्षी है जो महीनों तक बिना कुछ खाये पिये रह लेता है?
- ▶ ध्रुवीय पेंगिन।
- ★ आधी रात को सूरज चमके ऐसा किस देश में होता है यानि लैंड ऑफ मिड नाईट किस देश को कहा जाता है?

- ▶ नार्वे को।
- ★ किस देश का राष्ट्रपति का कार्यकाल एक साल का होता है?
- ▶ स्विटजरलैंड।
- ★ कौनसी मछली है जो पानी के बाहर कई दिनों तक जीवित रहती है?
- ▶ एशिया की मेढ़क मछली।
- ★ किस देश के राष्ट्रपति की पत्नी को वनमानुष अपहरण कर ले गया था?
- ▶ फ्रांस के राष्ट्रपति की पत्नी हेनरीट पॉइनकेयर को सन् 1914 में।
- ★ कौनसा पक्षी है जो जमीन पर पैर नहीं रखता?
- ▶ हरियल पक्षी।
- ★ आग बरसाने वाला पेड़ कहाँ पर पाया जाता है?
- ▶ मलेशिया।
- ★ किस राजा ने दाढ़ी पर कर लगाया था? वह कब और कहाँ का रहने वाला था?
- ▶ पीटर दी ग्रेट ने। 15वीं शताब्दी, रूस का।
- ★ 750 ग्राम का बन्दर कहाँ पाया जाता है?
- ▶ विमी गर्मी सेट।
- ★ वह कौनसी मछली है जो पानी में तैरती है? जमीन पर चलती है और हवा में उड़ती है?
- ▶ गरनाई मछली।
- ★ कौनसा देश है जहाँ दो राष्ट्रपति हैं?
- ▶ सानमारीनो।
- ★ लोकसभा में एक भी दिन न जाने वाले प्रथम भारतीय प्रधानमंत्री कौन है?
- ▶ चौधरी चरणसिंह।

संकलन : नेहा व मोहित ईसरानी (वीरपुर)

कविता : सुकीर्ति भट्टनागर

धूप

उजली उजली धूप सुनहरी,
जब आंगन में आती है।
मीठी-मीठी सी गर्माई,
अंगों में भर जाती है॥

सर्दी की ठिठुरी दोपहरी,
बिना धूप के सूनी है।
मुट्ठी में भर गरम सिंकाई,
नहीं अगर बिखराती है॥

बच्चे बूढ़े पंगु से बन,
विस्तर में दुबके रहते।
पर खिड़की पर आते ही वह,
सबको बाहर लाती है॥

गुड़, गञ्जक और मूंगफली,
भाती सबको सर्दी में।
धूप सुहानी सर्दी की तो,
मेवों सी मन भाती है॥



शाल कविता : हरजीत निधाद

बसंत पंचमी उत्सव महान

बसंत पंचमी है प्रिय उत्सव महान।
भारतीय संस्कृति की ये पहचान।
मौसम में हर रंग कुदरत ने घोला,
उमंग है इस उत्सव की जान।

शीतल समीर मंद बहे पुरवाई।
महक उठी धरती महके अमराई।
मौसम मदमस्त हुआ कुदरत का जादू,
खेतों में सरसों खिली, छाई तरुणाई।

खिले खिले फूलों पर भैंवरे मंडराते।
लेकर पराग यहाँ वहाँ बाँट आते।
सरसों के फूल लहराते मस्ती में,
पीला रंग प्यारा ये सभी पर चढ़ाते।



नीम का घमण्ड

बात बहुत पुरानी है। एक जंगल था। वहाँ आम और नीम के पेड़ बिल्कुल पास-पास लगे हुए थे।

एक बार रानी मधुमक्खी नीम के पेड़ के पास आकर बोली, “नीम भाई, क्या मैं आपकी किसी शाखा पर अपना छत्ता (घर) बना सकती हूँ?”

मधुमक्खी की बात सुनते ही नीम तुनक पड़ा, “नहीं, कोई जरूरत नहीं जो तुम मेरे ऊपर अपना छत्ता बनाओ। इतने सारे पेड़ नहीं दिखाई पड़ते, किसी पर भी छत्ता बनाओ। जाओ यहाँ से भागो।”

आम ने मधुमक्खी और नीम की बात सुन ली थी। आम बोला, “अरे नीम भाई, तुम्हें क्या हर्ज है? मधुमक्खी तुम्हारी शाखाओं पर छत्ता बनायेगी तो वे ज्यादा सुरक्षित रहेंगी। उसे अपना छत्ता बना लेने दो।”

आम की बात पर नीम का पेड़ और बिगड़ पड़ा। वह बोला, “तुम ही क्यों नहीं अपनी शाखाओं पर मधुमक्खी को छत्ता बनाने देते।”

आम के पेड़ ने मधुमक्खी से अपनी शाखाओं पर छत्ता बनाने को कहा। मधुमक्खी ने छत्ता बना लिया। एक बार कुछ लोग आम के पेड़ को काटने



लगे तभी उनकी निगाह मधुमक्खियों के छत्ते पर पड़ी। एक आदमी बोला, “यार, हमने ये आम का पेड़ काटा तो मधुमक्खियां हम पर टूट पड़ेंगी।”

दूसरे आदमी ने कहा, “हाँ, तुम बिल्कुल सही कहते हो! चलो उस नीम के पेड़ को काटते हैं। जैसे ही नीम के पेड़ पर उन आदमियों ने कुल्हाड़ी मारी वैसे ही अपने बचाव की पुकार नीम का पेड़ करने लगा। नीम की पुकार सुनकर आम के पेड़ ने मधुमक्खियों से नीम की रक्षा करने को कहा। उसकी बात सुनकर आम के पेड़ की शाखाओं पर रह रहीं मधुमक्खियों ने अपनी फौज के साथ उन आदमियों पर आक्रमण कर दिया। पेड़ काटने वाले उल्टे पैर भाग खड़े हुए। नीम का पेड़ मधुमक्खियों को धन्यवाद देने लगा।

मधुमक्खियां बोलीं, “नीम भाई, हमें धन्यवाद मत दो, धन्यवाद तो आम का करो जिन्होंने हमें अपनी शाखाओं पर छत्ता बनाने की जगह दी और आपको बचाने के लिए हमसे कहा, जिससे हमने उन लोगों पर हमला बोल दिया और वे भाग खड़े हुए। नीम का पेड़ शांत हो गया। उसका घमण्ड मिट चुका था। अब वह अपनी गलती के लिए क्षमा मांग रहा था। ●



सच्चा न्याय

भारतीय संस्कृति में काशी का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। यहाँ के राजा न्याय के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध रहे हैं।

बात बहुत पुरानी है। माघ का महीना था। शीतऋतु थी। काशी नरेश की महारानी अपनी दासियों के साथ गंगा-स्नान को गई थीं। उस समय गंगा किनारे अन्य किसी को नहाने जाने की अनुमति नहीं थी। गंगा नदी के किनारे जो झोपड़ियां थीं, उनको राज्य के राजसेवकों ने खाली करा लिया था। महारानी स्नान करने के उपरान्त ठंड से बुरी तरह कांप रही थीं। उन्होंने अपने आसपास देखा, उन्हें कहीं पर भी सूखी लकड़ियां दिखाई नहीं दीं। तब रानी ने एक दासी को बुलाकर कहा— ‘किसी एक झोपड़े में आग लगा दो, जिससे मेरी सर्दी दूर हो जाये। मुझे अपना शरीर सेंकना है।’

दासी ने रानी से कहा— ‘महारानी जी! इस झोपड़ी में दीनहीन गरीब रहते होंगे या फिर साधु-संत। यदि ऐसे जाड़े में इसमें आग लगा दी जाएगी तो फिर ये गरीब लोग कहाँ जाएंगे?’

महारानी का नाम करुणा था लेकिन सम्पन्नता में पली होने के कारण उन्हें दीनहीन गरीब लोगों के कष्ट का कोई अनुभव नहीं था। वे अपना आदेश पालन कराने में बड़ी चतुर थीं। उन्होंने तत्काल दूसरी दासी को आदेश दिया कि— ‘यह बड़ी कृपावान बनी है। इसे तुरन्त मेरे सामने से हटा दो और सामने वाले झोपड़े में आग लगा दो।’

महारानी करुणा की आज्ञा का तत्काल पालन किया गया। जब एक झोपड़े में आग लगा दी गई तो तेज हवा के कारण आग फैलने लगी। देखते ही देखते सभी झोपड़े आग को समर्पित हो गए। रानी जी की सर्दी तो दूर हो गई और वे राजमहल वापस आ





गई। तभी जिनके झोपड़े जले थे। वे रोते-बिलखते राजसभा में पहुँच गए। महाराज को इस समाचार से अत्यन्त मानसिक कष्ट हुआ। उन्होंने राजमहल में महारानी के कक्ष में जाकर कहा— ‘यह तुमने क्या किया? तुमने हमारी प्रजा के घर जलाकर बहुत बड़ा अन्याय किया है। इसका कुछ ध्यान नहीं है तुम्हें?’

महारानी को अपने रूप और अधिकार का बड़ा घमण्ड था। वे महाराज से बोली— ‘आप उन सड़े-गंदे झोपड़ों को घर कह रहे हैं। वे तो जला देने के ही योग्य थे। इसमें अन्याय की कोई बात नहीं है।’

अब महाराज ने कुछ कठोर शब्दों में कहा— ‘महारानी न्याय सबके लिए बराबर होता है। तुमने गरीबों को असहनीय कष्ट दिया है। यह झोपड़े गरीबों के लिए बहुत कीमती थे। अब तुम यह भली प्रकार समझ जाओगी।’

महाराज ने तत्काल दासियों को आज्ञा दी— ‘महारानी के स्वर्णाभूषण और कीमती वस्त्र ले लिए जाएं। इनको एक फटी-पुरानी साड़ी पहनाकर राजसभा में तुरन्त उपस्थित करो।’

जब तक महारानी कुछ कहें। इससे पूर्व महाराज अन्तःपुर के कक्ष से चले गए। दासियों ने राजा की आज्ञा का पालन किया। एक भिखारिन की तरह फटी साड़ी पहने जब महारानी राजसभा में उपस्थित हुई तो न्यायासन पर बैठे महाराज ने प्रजा को अपनी घोषणा सुनाई।

उन्होंने कहा— ‘मनुष्य जब तक स्वयं कष्ट में नहीं होता। वह दूसरों के कष्ट का अनुभव नहीं प्राप्त कर सकता। महारानी जी को राजमहल से निर्वासित घोषित किया जाता है। जिन झोपड़ों को इन्होंने जलाया है। जब तक यह भिक्षा मांगकर उन्हें बनवा नहीं देंगी तब तक राजभवन में इनका प्रवेश वर्जित होगा।’

किटटी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालडा



किटटी, मैं बाजार जा रही हूँ। तुम घर में ही रहना।
कहीं बाहर मत जाना और कोई शरारत भी मत करना।

पिंकू, मेरी मम्मी बाजार जा रही है। मम्मी घर
पर नहीं होगी। तुम मोली और मोटू को लेकर
मेरे घर आ जाओ। हम सब मिलकर पार्टी करेंगे।



किटटी! मैं जा रही हूँ, तुम
अपना ध्यान रखना।

ठीक है, मम्मी।

आओ दोस्तों! मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रही थी, अन्दर आ जाओ।

दोस्तों, तुम सब बैठकर टी.वी. देखो।
मैं कुछ खाने को लेकर आती हूँ।

धम्मा...

अरे देखो, किट्टी के पैरों में कांच चुभ गया और खून भी निकल रहा है।

तभी दरवाजे की बंटी बजी।

अरे नहीं, कहीं मम्मी तो नहीं आ गई?

मोली तुम जाकर दरवाजा खोलो। मैं और पिंकू किट्टी को कमरे में ले जाते हैं।



जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

कठी न भूलो

★ प्यार और सत्कार का मूल आधार है— ब्रह्मज्ञान। मानवता की माला प्रभु-परमात्मा रूपी धागे के बिना असम्भव है। जातियों और भाषाओं की भिन्नता होने पर भी इन्सान केवल इन्सान है। अपने आपको जानकर ही मानव एकता सम्भव है। इन्सान एक-दूसरे के खून से नहीं बल्कि ज्ञान के अमृत से अपनी प्यास बुझाये। — निरंकारी मिशन का सन्देश

★ सद्गुरु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर जीवन-मुक्त शिष्य ही असल में मुक्त होता है। — निर्मल जोशी

★ मनुष्य जितना ज्ञान में घुल जाता है उतना ही कर्म के रंग में रंग जाता है। — विनोबा

★ लोग अपने कर्तव्य भूल जाते हैं लेकिन अपने अधिकार उन्हें याद रहते हैं। — इंदिरा गाँधी

★ अपने जीवन का ध्येय बनाओ और इसके बाद अपनी सारी शारीरिक और मानसिक शक्ति जो भगवान ने तुम्हें दी है उसमें लगा दो। — कालाइल

★ शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। — चाणक्य

★ ज्ञान गहरे सागर के समान है। — हरदयाल

★ एक कामयाब आदमी वह होता है जो उन ईटों के साथ एक पक्की नींव बना सकता है जिन्हें अन्य ने उस पर फेंकी है।

★ संतोष का वृक्ष कड़वा है लेकिन इस पर लगाने वाला फल मीठा होता है। — स्वामी शिवानंद

★ अकेले फूल को कई कांटों से ईर्ष्या करने की जरूरत नहीं होती। — रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ आदर्श परिस्थितियों के आने या बेहतर अवसर मिलने के भरोसे ही न बैठे रहें, वे कभी नहीं आएंगे। बुद्धिमानी यही है कि कोई शुरूआत करें। — जेनेट एर्स्किन स्टुअर्ट

★ पराधीनता समाज के समस्त मौलिक नियमों के विरुद्ध है। — मॉन्टेस्क्यू

★ उचित अवसर के अभाव में योग्यता का मूल्य बहुत कम रह जाता है। — नेपोलियन

★ गर्म लोहे पर ठंडा हथौड़ा ही काम कर सकता है। — सरदार पटेल

★ विद्या के साथ जीवन का आदर्श ऊँचा न हो तो पढ़ना व्यर्थ है। — मुंशी प्रेमचन्द्र

★ श्रम सफलता का मूल मंत्र है। — पं. जवाहरलाल नेहरू

★ जो दूसरों की बुराई करता है वह अपनी बुराई करता है। — महात्मा बुद्ध

★ अच्छे गुण सदैव मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हैं। — जॉनसन

★ मानाव जीवन बचाना सबसे बड़ा धर्म है।

★ एक कामयाब आदमी वह होता है जो उन ईटों के साथ एक पक्की नींव बना सकता है जिन्हें अन्य ने उस पर फेंकी है।

★ सफल होने के लिए जरूरी है कि सफलता की इच्छा नाकाम रहने के डर से बड़ी हो। — अज्ञात

कहानी : फारुख हुसैन

तेजू गिद्ध और पक्षी



बरगद का एक विशाल पेड़ था। उस पर सैंकड़ों पक्षी रहते थे। सभी पक्षियों का आपस में बहुत प्रेम था। अगर कोई पक्षी बीमार पड़ जाता तो सभी मिलकर उसकी सेवा करते। इसलिए किसी को भी कोई परेशानी नहीं होती।

एक दिन उस बरगद के पेड़ पर तेजू नाम का एक गिद्ध आया। वह शहर से आया था जो कि काफी कमजोर लग रहा था। उसने उस पेड़ पर रहने के लिए जगह मांगी। किसी को उसके रहने से क्या ऐतराज था इसलिए सभी पक्षियों ने उसे रहने के लिए जगह दे दी। धीरे-धीरे वह वहाँ रहकर हृष्ट-पुष्ट और ताकतवर हो गया।

जब उसने देखा कि उस पेड़ पर दूसरे छोटे पक्षी भी रहते हैं। तब उसने सोचा— क्यों न वह उन पर

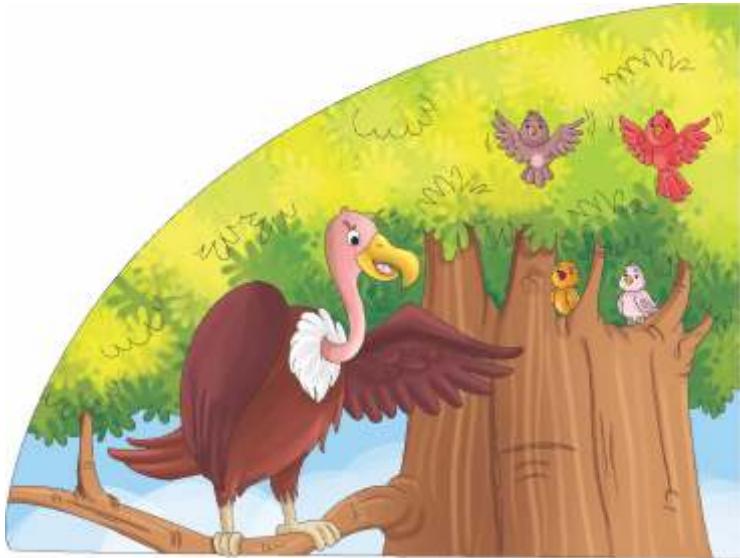
राज करे, दूसरे दिन ही उसने वहाँ ऐलान कर दिया कि अब सब लोग मेरे गुलाम हैं और सभी लोग मेरी बात मानेंगे।

—हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे।— सोनी मैना बोली।

यह सुनकर तेजू गिद्ध को गुस्सा आ गया उसने उसके घोंसले को तोड़ दिया। यह देखकर सभी पक्षी डर गये।

तेजू गिद्ध अब रोज ही किसी न किसी को सताने लगा। वह रोज ही किसी न किसी का घोंसला तोड़ देता। जिससे सभी पक्षी बहुत ही परेशान रहने लगे।

कीवी कौवी ने पहली बार अण्डे दिये थे और वह बहुत ही खुश थी। तभी न जाने कहाँ से तेजू गिद्ध वहाँ आ गया। जब उसने कौवी को खुश देखा



तो उसने उसका कारण पूछा— कौवी ने अण्डों के बारे में बताया। तेजू गिद्ध को गुस्सा आ गया और उसने अण्डों को घोंसले से नीचे फेंक दिया। बेचारी कौवी कौवी अपनी बेबसी पर आंसू बहाती रह गई।

यह देख सभी पक्षियों की आँखों में आंसू आ गये। एक दिन तेजू गिद्ध कहीं गया हुआ था, तब सभी पक्षियों ने एक सभा की।

—अब हम यह जगह छोड़कर किसी दूसरी जगह चले जायेंगे।— मिट्टू तोता बोला।

—मैं इस जगह को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगी। मैं इसको सबक सिखाऊंगी।— कौवी कौवी बोली।

—लेकिन हम लोग उसका क्या बिगड़ लेंगे।— बिट्टू बगुला बोला।

—हम लोग तेजू के ऊपर एक साथ हमला कर देंगे। शालिनी मैना बोली।

—नहीं, मेरे पास एक उपाय है जिससे सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।— कौवी कौवी बोली।

—तब तो जल्दी बताओ।— मीनू कठफोड़वा बोला।

—आज मुझे लग रहा है कि तूफान आने वाला है। जिस पर तेजू रहता है अगर हम उस टहनी को काट दें तो तूफान से उसे अच्छा सबक मिल सकता है और यह काम तुम ही कर सकते हो। तुम उस डाल को धीरे-धीरे

काटना शुरू कर दो, बस हमारा काम हो जाएगा।— कौवी कौवी बोली।

—तो यह काम मैं अभी शुरू कर देता हूँ।— मीनू कठफोड़वा बोला। और वह उस टहनी को काटने लगा, जब काफी टहनी कट गई तो कौवी कौवी ने उसे टहनी काटने से मना कर दिया।

दूर से उन्हें तेजू गिद्ध आते हुए दिखा। सभी पक्षी अपने-अपने घोंसलों में चले गये। तेजू गिद्ध भी अपने घोंसले में चला गया। कुछ ही देर में तूफान आ गया, जिससे सभी ओर अंधेरा छा गया। तभी उन्हें तेजू गिद्ध के चीखने की आवाज सुनाई दी जिससे सभी पक्षी बहुत ही खुश हुए।

सुबह जब तूफान रुका तब सभी पक्षी अपने घरों से बाहर निकले। उन्होंने देखा कि तेजू गिद्ध अपने घोंसले और डाल सहित नीचे गिरा पड़ा था। उसे काफी चोटे आई थीं। वह दर्द से तड़प रहा था। हमें इसकी मदद करनी चाहिए।— कौवी कौवी बोली।

—लेकिन इसने तो हमें बहुत सताया है और इसने तो तुम्हारे अण्डे भी फोड़ दिये।— शालिनी मैना बोली।

—इसके बारे में बाद में सोचेंगे लेकिन अभी हमें इसे बचाना चाहिये, वरना यह मर जाएगा।— कौवी कौवी बोली और उड़कर उसके पास चली गई।

सभी ने मिलकर उसे उठाया और उसके घावों पर दवा लगाई। यह देखकर तेजू गिद्ध रोने लगा और वह सभी से माफी मांगने लगा।

सभी ने उसे माफ कर दिया। वहाँ फिर से सभी लोग प्रेम से रहने लगे।



जीव-जरुर : दीपांशु जैन

फुर्तीला और गिराया होता है: ऊदबिलाव

ऊदबिलाव का नाम लेते ही एसे प्राणी की तस्वीर सामने आती है, जो पानी और जमीन दोनों पर रहता है और जिसका रंग रूप बिल्ली से मिलता—जुलता है। सही अर्थों में ऊदबिलाव पानी की बिल्ली ही है। इस पानी की बिल्ली के करतब भी बड़े निराले हैं। खेलने पर आ जाए तो देखने वाले दांतों तले उंगली दबा लें। नई—नई चालें और कलाबाजियों के जुदा—जुदा तरीके जिस खूबी से वह सीख लेता है। उसकी वजह से उसकी बुद्धिमत्ता का लोहा मानना पड़ता है। इधर उसने कोई नई चीज देखी नहीं कि वह उसकी हूबहू नकल करने की योग्यता रखता है।

इस ऊदबिलाव को पालने की कोशिश तो कइयों ने की और बार—बार की, पर जिस शख्स ने सबसे पहले इस जीव को पालने में सफलता पाई, वह एमिल लायर्स था। इस संबंध में उसके अनुभवों का अकूत खजाना

जमा हो चुका है। उसने एक घटना का जिक्र किया है कि “एक बार बारह वर्षीय मादा ऊदबिलाव अपने तीन बच्चों के साथ पड़ोस के घर में जा घुसी और सीढ़ियां चढ़कर सीधे स्नानागार में चली गई। वहाँ वह आराम से नहाती रही और फिर उतनी ही इत्मीनान के साथ रँगते हुए पड़ोसी के बिस्तर पर जा लेटी।”

ऊद की तबीयत बेहद रंगीन होती है। मजाक वह ऐसे कर सकता है, जिस प्रकार मानव मजाक करने की क्षमता रखता है। यह खोज नई है और इसके खोजकर्ता हैं, प्रसिद्ध लेखक गैबिन मैक्सवेल। इससे पूर्व वह ऊद के बारे में दो दिलचस्प किताबें लिख चुके हैं, जो कि अपने विषय और विलक्षण अनुभव सामग्री के कारण दुनिया भर में चर्चित हुई हैं। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि ऊद ठीक आदमी की तरह हँसता है। उसके हँसने की प्रक्रिया भी खासी दिलचस्प है, हँसते वक्त वह पीठ के बल

लम्बा लेट जाता है और फिर मुँह खोलकर जोरों से हिला करता है।

इसकी मूँछों की तुलना बिल्ली के पैरों से की जा सकती है और इसकी पानीदार छोटी-छोटी आंखें गहरा काला रंग लिये होती हैं। सामान्य हालत में देखा जाए तो इसका शरीर थोड़ा—सा गोल आकार लिए होता है। अगर और खुलासा किया जाए तो इसका शरीर धनुषाकार लगता है। इस जीव के पैर अंदर की तरफ घुमे होते हैं। जालीदार पंजे, पुख्ता टांगें और चौड़ी पूँछ इसकी वे विशेषताएं हैं, जो प्रकृतिप्रदत्त हैं। इन्हीं की बदौलत यह पानी में तरह—तरह के खेल दिखाता है। पर एक बात याद रहे। ऊद जितना मिलनसार और दिलचस्प किस्म का जीव है, आक्रमक होने पर वह उतना ही खतरनाक भी हो सकता है। अगर वह हमला करने का इरादा बना ले तो उससे न तो किसी रक्षा साधन से और न ही दस्ताने वगैरह से बचा जा सकता है।

आवाज के मामले में भी ऊद बेमिसाल जीव है। कभी वह चहकता है, जैसे चिड़िया चहक रही हो। कभी चूं—चूं की ध्वनि करता है, ठीक चूहे की तरह। कभी ऐसा लगता है कि वह जैसे दबी हुई हँसी हँस रहा हो। इसके विपरीत कभी वह इतनी जोर से चीखता है कि उसकी आवाज कम से कम दो किलोमीटर दूर से सुनाई दे जाती है। इसकी चीख इतनी मार्मिक और पुरअसर होती है कि उसे सुनकर अच्छे—अच्छों के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। जब वह बिलखती है तो उसका गुस्सा और

प्रतिशोध की भावना की अदम्य शक्ति का आभास होता है।

कौतुहल की भावना इसमें कूट—कूट कर भरी है। नई—नई चीजों के बारे में जानने की इसकी ललक कमोबेश किशोर वय के बालकों—सी होती है। अगर इसे कोई खिलौना मिल जाए तो इसके करतब देखने में अपना ही आनंद आता है और कांच की गोलियां खेलने का शौक? इस मामले में तो वह इंसान के खिलंदड़े बच्चों से भी बाजी मार ले जाता है। सागर तट पर आप इसे सीपियां इकट्ठी करते हुए अक्सर देख सकते हैं। यह भी इसके प्रमुख शौक में शुमार है। इस तरह यह भी साबित हो जाता है कि ऊदबिलाव की बहुत—सी बातें आदमी की आदतों से मिलती—जुलती हैं।

इसके प्रिय खाद्य पदार्थों में है — झींगुर। इसके साथ ही वह मेंढक, मछली, घोंघा और सांप खाने में दिलचस्पी रखता है। खासतौर पर वह कीचड़ में पलने वाली मछलियों का मुरीद होता है। याददाश्त भी इसकी गजब की होती है। एक बार तो कमाल ही हो गया। जब एक ऊदबिलाव ने अपने तीन बरस पहले बिछुड़े मालिक को देखते ही पहचान लिया।

पालतू ऊदबिलाव रजाई ओढ़कर आदमी की तरह तकिया सिर के नीचे लगा कर सोने में विश्वास रखता है। ऊद में साहस की कमी नहीं। अपने हर दुश्मन को बात ही बात में हरा देने की उसमें अकूत क्षमता होती है। यहाँ तक कि जंगली बिल्ली (वन बिलाव) को मारने में

वह ज्यादा देर नहीं लगाता। अपने फुर्तीले बदन की वजह से वह सांप के लिए साक्षात् काल से समान होता है। पहले वह सांप को उकसाता है, ताकि वह उस पर हमला करे और जैसे ही सांप हमला करता है, वह उसके फन को पकड़ कर बुरी तरह झिझोड़ता

है। उसकी यह झिझोड़ने की प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक सांप मर कर परत नहीं पड़ जाता।

मादा ऊदबिलाव साढे नौ माह की उम्र से ही बच्चे देना शुरू कर देती है। एक बार में उसके चार तक बच्चे होते हैं। काले रेशमी छोनों को देखकर दिल करता है कि यह इसी तरह बच्चे बने रहें। पूरे छह महीने तक मादा ऊद इनकी परवरिश करती है। तीसरे मध्य में इन बच्चों का तैराकी प्रशिक्षण शुरू होता है। जैसा कि सभी बच्चों के साथ होता है, बाल ऊद पानी के पास आते ही भय से कांपने लगता है। इस कारण उन्हें जबरन पानी में ठेलना पड़ता है। कभी—कभी मादा ऊद बच्चों को मछली का लालच देकर उन्हें पानी में कूदने को प्रेरित करती है। अक्सर मादा अपनी पीठ पर बच्चों को सवार कर बार—बार निर्ममता से पानी में डुबकी मारती है। बच्चे के सामने दो ही विकल्प रह जाते हैं, या तो वह तैरने को तैयार हो जाए, नहीं तो उसका डूबना तो निश्चित है ही।

लेकिन यह शुरू—शुरू की बात है। जब एक बार ऊद के बच्चों के मन में पानी के प्रति लगाव पैदा हो जाए तो वह दिन—ब—दिन



बढ़ता ही जाता है। वह फिर पानी में अपने मौलिक खेल ईजाद करना शुरू कर देता है। जब वह मूँड में होता है तो उसकी पानी में तैरने की नजाकत का कोई जवाब नहीं रहता। अगर दो ऊदबिलाव पानी में खेल रहे हों, तो ऐसा लगता है जैसे दो नहीं बीस ऊदबिलाव खेल रहे हों। दरअसल उनके खेलने की गति इतनी तेज होती है कि इस तरह का भ्रम पैदा होना स्वाभाविक ही होता है। भारत में ऊदबिलाव की तीन प्रजातियां पाई जाती हैं। चिकनी खाल वाले ऊद नदियों, झीलों और प्राकृतिक स्रोतों में पाए जाते हैं। सामान्य ऊद की खाल खुरदरी होती है और वह झारने व झीलों की अपेक्षाकृत ठण्डे स्थानों में रहना पसंद करता है। भारत का सबसे छोटा ऊद एम्बलोनिक्स है। इसका वजन छह से तेरह पौँड तक होता है।

ऊदबिलाव आदमी का सबसे प्रिय खिलाड़ी मित्र माना जाता है, पर यह दुख की बात है कि इसके कीमती पैरों के लिए आदमी ही इसे खत्म करने पर तुला हुआ है। इसीलिए लियर ने एक जगह लिखा है कि ऊदबिलाव को आज एक ऐसे मित्र की जरूरत है, जो कि उसके अस्तित्व की लड़ाई में उसके साथ क्षेष्ट्र से क्षेष्ट्र मिलकर चल सके। ●

पढ़ो और हैँसो



ग्राहक : आज स्पेशल सब्जी में क्या है?

वेटर : अंगूर विद लौकी।

ग्राहक : (सब्जी खाने के बाद) इसमें अंगूर का स्वाद तो है ही नहीं।

वेटर : पर हमने दोनों बराबर मात्रा में डाले थे।

ग्राहक : किस हिसाब से?

वेटर : पाँच लौकी और पाँच अंगूर।

एक बार एक हाथी घूमने निकला। उसे रास्ते में चींटी मिल गई। चींटी ने कहा— मेरे साथ खेलोगे? हाथी : अगर मम्मी ने देख लिया तो बहुत मारेंगी। चींटी : चिन्ता की कोई बात नहीं। अगर तुम्हारी मम्मी आ गई तो तुम मेरे पीछे छुप जाना।

पापा : बेटा तुम फेल कैसे हुए?

बेटा : पापा, पेपर में सवाल ही ऐसे आए थे जो मुझे पता नहीं थे।

पापा : फिर तुमने उत्तर कैसे लिखे?

बेटा : मैंने भी उत्तर ऐसे ही लिखे जो मास्टर जी को पता नहीं थे।

चिंटू : सीनियर और जूनियर में क्या अन्तर है?

मिंटू : जो समुद्र के पास रहता है वो 'सी-नियर' और जो चिंड़ियाघर के पास रहता है वो 'जू-नियर'। — पूजा संगतानी (बालोतरा)

बैंक मैनेजर : कैश खत्म हो गया है, कल आना।

दीपू : लेकिन मुझे मेरे पैसे अभी चाहिये।

बैंक मैनेजर : आप गुस्सा मत करिये। शांति से बात कीजिये।

दीपू : ठीक है बुलाओ शांति को, आज उसी से बात करूँगा।

अध्यापक : (छात्र से) बताओ, काल कितने प्रकार के होते हैं?

छात्र : काल तीन प्रकार के होते हैं।

अध्यापक : बताओ तीन प्रकार के काल कौन से हैं?

छात्र ने जवाब दिया— डॉयल काल, मिस काल और रिसीव काल।

शिक्षक : (छात्रों से) बच्चों बताओ, पुराने जमाने में रावण की लंका को सोने की लंका क्यों कहते थे?

एक छात्र : सर, क्योंकि कुम्भकर्ण हमेशा सोता रहता था इसलिए उसे सोने की लंका कहते थे।

गुड़िया : (अमन से) भैया मैं बर्फ खाऊँगी।

अमन : गुड़िया सर्दियों में बर्फ नहीं खाते हैं।

गुड़िया : भैया, मैं बर्फ गर्म करके खा लूँगी।

— गुरुचरण आनन्द (लुधियाना)



दो आलसी कंबल ओढ़कर सो रहे थे। तभी एक चोर आया और कंबल लेकर भाग गया।

पहला आलसी : पड़े-पड़े बोला— पकड़ो-पकड़ो।

दूसरा आलसी : रहने दे जब तकिया लेने आएगा तब पकड़ लेंगे।

मम्मी : सुशील, आज जो पकड़े हमने खाए हैं उनके बारे में अपने पापा को न बताना।

सुशील : मम्मी, नहीं बताऊँगा। अब देखो न मैं और पापा कई बार बाजार जाकर आइसक्रीम खाते हैं। क्या मैंने कभी इस बारे में आपको बताया है?

नंदू : कल रात हमारे घर में चोर चुस आए और नकदी, जेवर वगैरह सब कुछ ले गए।

मित्र : लेकिन तुम तो हमेशा अपने साथ पिस्तौल रखते हो?

नंदू : अरे गनीमत समझो कि चोरों की नजर उस पर नहीं पड़ी, वरना उससे भी हाथ धोना पड़ता।

एक बच्चा दवाई खाने से चिढ़ता था। पिता ने दवाई की गोली रसगुल्ले में रख दी और थोड़ी देर बाद पिता ने पूछा— रसगुल्ला खा लिया?

बच्चा : हाँ रसगुल्ला खा लिया, गुठली कूड़े में फेंक दी।

— विश्वास पाल (कानपुर)

नौकर : (मालिक से) मालिक आपको मुझ पर विश्वास नहीं है?

मालिक : अरे! मैं तुझ पर विश्वास नहीं करता तो तुझे तिजोरी की चाबियां भी नहीं देता।

नौकर : पर मालिक! उनमें से तो तिजोरी में एक भी चाबी नहीं लगती।

मम्मी : बेटा, आज पैसे नहीं है इसलिए आज दूध उधार ले आओ।

बेटा : मम्मी जी, कल से उधार की समस्या खत्म हो जायेगी।

मम्मी : बेटा वो कैसे?

बेटा : मम्मी, गणित वाले सर हमें कल रुपयों से पैसा बनाना सिखाएंगे।

पप्पू : डॉक्टर साहब क्या आप मेरी बीमारी का पता लगा सकते हैं?

डॉक्टर : हाँ! तुम्हारी आँखें बहुत कमजोर हैं।

पप्पू : इतनी जलदी आपको कैसे पता चला?

डॉक्टर : तुमने बाहर बोर्ड पर नहीं पढ़ा कि मैं जानवरों का डॉक्टर हूँ।

— मीनू (राजपुरा)

क्या आप जानते हैं?

संग्रहकर्ता : विद्या प्रकाश

- ★ समुद्र या नदी के आस-पास विचरण करने वाले राजहंस (व्हीपिंग क्रेन) एक ऐसा पक्षी है जिसकी आवाज तीन मील दूर तक सुनी जा सकती है।
- ★ हाथी की सूंड में एक भी हड्डी नहीं होती। उसकी सूंड में केवल मांसपेशियां होती हैं।
- ★ कोबरा सांप के एक ग्राम जहर से 150 व्यक्तियों की मौत हो सकती है।
- ★ टारपीडो नामक मछली के स्पर्श मात्र से 40 से 2000 बोल्ट का झटका लगता है।
- ★ केंचुआ अपने वजन से दस गुना अधिक वजन खींच सकता है।
- ★ अमेरिका में पाया जाने वाला मैंड्रेक एक ऐसा पौधा है जिसकी शक्ल मनुष्य से मिलती-जुलती है और उसे उखाड़ने पर बच्चे के रोने जैसी आवाज आती है।
- ★ जिराफ बोल नहीं पाता क्योंकि वह जन्मजात गूँगा होता है।
- ★ मच्छर अपने वजन से तीन गुना अधिक खून पी सकता है।
- ★ पेरू में एक ऐसा पेड़ है जिससे 20 गैलेन पानी प्रतिदिन टपकता है।
- ★ फ्रांस की जलवायु ऐसी है कि वहाँ मच्छर पैदा नहीं हो सकते।
- ★ केले के पेड़ में लकड़ी नहीं होती तथा तने में चिकनी रेशेदार जलयुक्त परत पाई जाती है।
- ★ कुछ पेड़ ऐसे भी होते हैं जो अपने आप ही वर्षा करते, आग उगलते और धुआं निकालते हैं।

बोधकथा : इलू रानी

स्थायी विजय

एक बार एक राजा अपनी विशाल सेना लेकर पड़ोसी राजा से युद्ध करने जा रहा था। रास्ते में उसे एक महात्मा मिले। महात्मा ने पूछा— राजन! तुम अपनी सेना के साथ कहाँ जा रहे हो?

राजा ने बुलन्द आवाज में जवाब दिया— अपने शत्रु पर विजय पाने जा रहा हूँ।

यह सुनकर महात्मा ने कहा— लेकिन तुम्हारा शत्रु तो तुम्हारे पास है, बिल्कुल नज़दीक है।

राजा ने आस-पास देखते हुए कहा— भला यहाँ-कहाँ है मेरा शत्रु?

महात्मा ने कहा— अरे, तुम्हारा शत्रु तो तुम्हारे भीतर है।
—महात्मा जी, मैं कुछ समझा नहीं, आखिर आप

कहना क्या चाहते हैं? जो कहना है स्पष्ट कहें, क्योंकि मेरे साथ मेरी विशाल सेना का भी समय नष्ट हो रहा है।— राजा ने आक्रोश जताते हुए कहा।

इस पर महात्मा ने राजा को समझाते हुए कहा— हे राजन! काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि तुम्हारे असली शत्रु हैं जो कि तुमको सुखी नहीं बनने देते हैं, उन पर सीधा प्रहार कीजिये, तुम्हारी स्थायी विजय होगी, सांसारिक विजय तुम्हारी कभी पूरी नहीं होने वाली है।

महात्मा की बात से राजा बड़ा प्रभावित हुआ, उसने पड़ोसी राजा पर आक्रमण करने का विचार त्याग दिया और अपनी विशाल सेना को बीच रास्ते से वापस अपनी राजधानी में ले आया।

कविता : भानुवत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

खुशी लुटाते फूल

खिल-खिल खुशी लुटाते फूल।
हँसते और हँसाते फूल।

फूल धरा का हैं श्रृंगार,
इनके अनगिन नाम-प्रकार।
हृदय इनका है उदार,
फूल सभी को करते प्यार॥

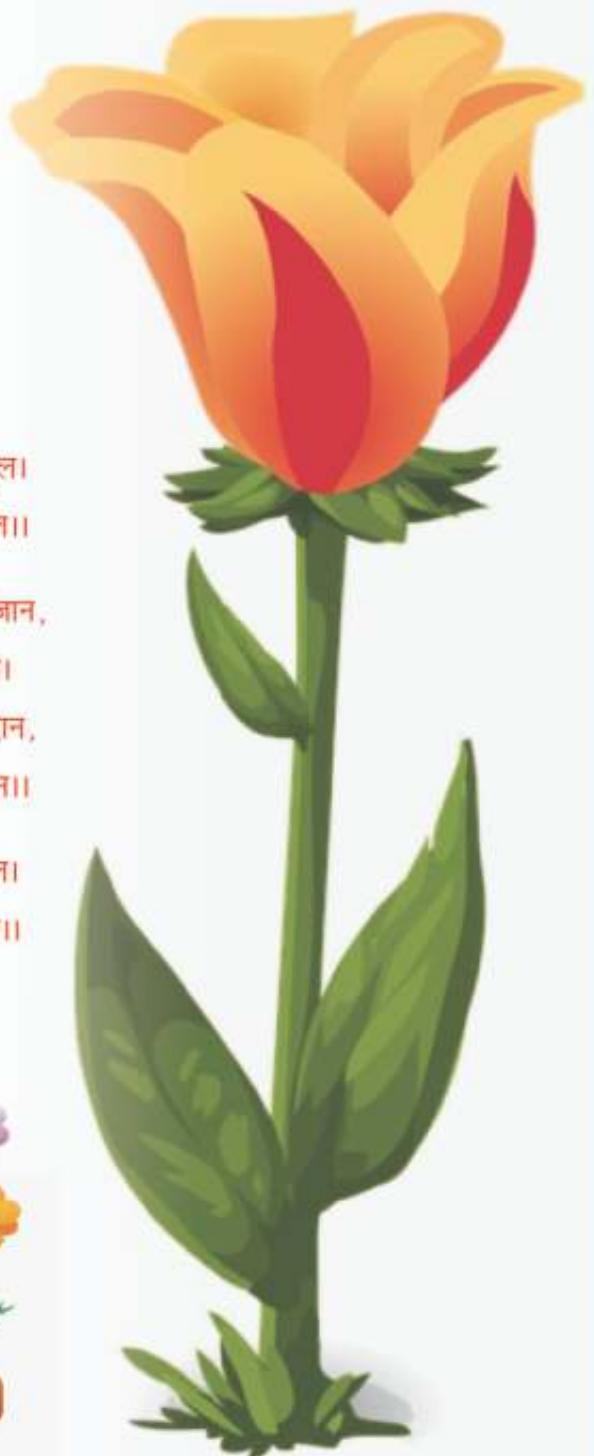
कभी न मुँह बनाते फूल।
मन्द-मन्द मुस्काते फूल॥

करके फूलों का मधुपान,
धौरे गुन-गुन करते गान।
फूलों की मधुरम मुस्कान,
लगती है अमृत समान॥

सबका मन बहलाते फूल।
प्यार सभी का पाते फूल॥

क्षण-भंगुर जीवन को जान,
फूल न करते मन म्लान।
परहित करना जीवन-दान,
मानव का सच्चा उत्थान॥

करके यही दिखाते फूल।
जीवन धन्य बनाते फूल॥



दिसम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र



संध्या सिंह

11 वर्ष

आर्यन सोप, राजमहल विलिंडग,
बापूजी नगर, भुवनेश्वर (ओडिशा)



गुरुप्रीति

12 वर्ष

शिवराम पार्क,
नांगलोई (दिल्ली)



जिया आर्य

11 वर्ष

डब्ल्यू जेड-1664, मुल्तानी मोहल्ला,
रानी बाग (दिल्ली)



सेफाली गौतम

14 वर्ष

गाँव : सुरेला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)



विक्रम सिंह सुन्दरचा

14 वर्ष

ग्राम : पीपलबास, पोस्ट : केसूली,
जिला : राजसंभद (गजस्थान)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों
को प्रसंद किया गया वे हैं—

जनत (नया नंगल, रोपड़),

नवदिशा (लोकनायकपुरम, दिल्ली),

समीप (सुरेला), नम्रता (इंद्रपुरी, अम्बाला),

लविश (गाँधी नगर, बटाला), **चंदात** (भायंदर),

खुशी (अशोक विहार कॉलोनी, नकोदर),

प्रज्ञा (कल्याण), **मानवी** (लहरागांगा),

चनमीत (हड्डसन लाइन, दिल्ली),

अंकुश (चेत सिंह नगर, लुधियाना),

दिव्यम (राजेन्द्र नगर, देहरादून),

आरंव (सुजानपुर टीगा), **मनत** (मालू, कांगड़ा),

सुजाता (पंजाला, कांगड़ा),

लहर (नेहरु कॉलोनी, देहरादून),

निधि (कनवर नगर, अहमदनगर),

संजना सोनी, **विधिता**, **समर्पिता** जयसिंघानी, **खुशी**,

आशीष साहू, **कनिका** नागदेव, **संदीप**, अनीशा

रहेजा, **सिमरन**, **सुजल** सोनकर, नम्रता, **समर्पण**,

आयुष मोटवानी, **दिशा**, आकृत, **हरप्रीति**, **हर्षित**,

प्रिया, **साहिल**, **जितेन्द्र** (रायपुर),

ओम सोमजनी, **जिया**, जय मनवानी, **सुमीत रूपाणी**,

हार्दिक मूलचंदानी, **शिव बम्बानी**, **मोहित गुरुनानी**,

भूमि जनवानी, **नंदिनी गुरुनानी**, देवांग, **चिराग**, **कुश**,

लक्ष्मि लालवानी, **संहित**, **निशिका**, **आस्था**, **भूमि**

किशोर, **दक्ष** (गोधरा)।

फरवरी अंक रंग भरो

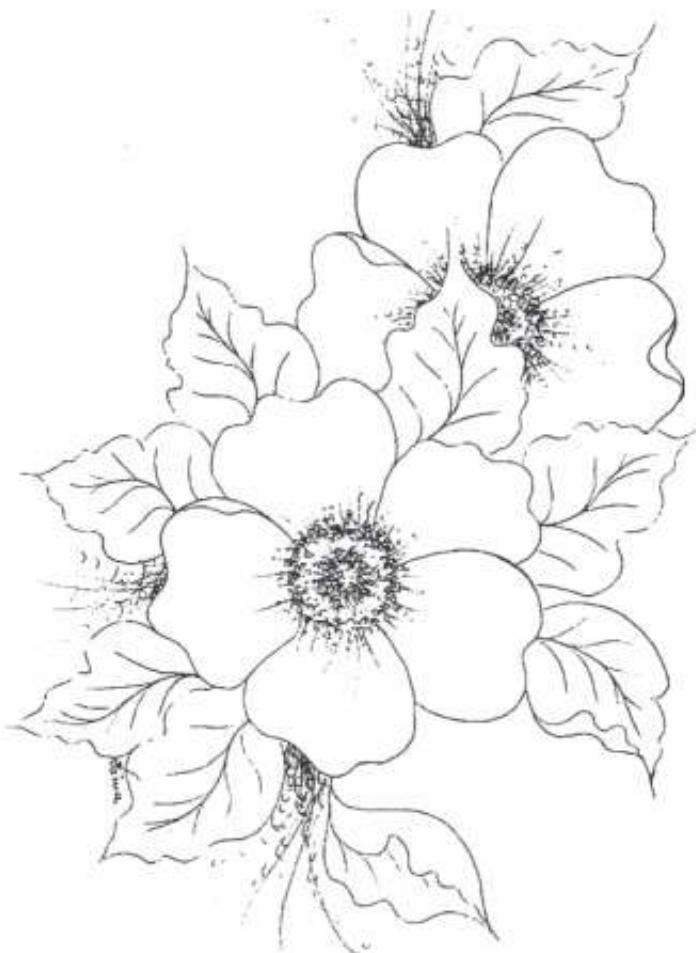
सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 फरवरी तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **अप्रैल** अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंगा मार्श



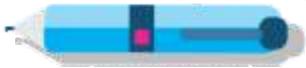
नाम आयु

पुत्र/पुत्री

पूरा पता

..... पिन कोड

आपके पत्र मिले



मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं और मेरा परिवार इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार करता है। मेरा सारा परिवार इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ता है।

हमारा सारा परिवार इस पत्रिका के बारे में बस इतना कहना चाहता है कि यह पत्रिका बच्चों के भविष्य के लिए बहुत ही अच्छी है।

मैं इसमें 'सबसे पहले', 'सम्पूर्ण अवतार बाणी', कविताएं तथा सभी कहानियां पढ़ता हूँ। मुझे इस पत्रिका से बहुत ज्ञान प्राप्त होता है।

- वैष्व किशोर (डाँगोली माँ)

हँसती दुनिया बच्चों के चारित्रिक, बौद्धिक एवं वैचारिक गुणों में वृद्धि के लिए यह पत्रिका अतुलनीय योगदान दे रही है।

इस नये वर्ष के शुभ अवसर पर अपनी जान-पहचान बाले बच्चों तक हँसती दुनिया पहुँचाकर एक अमूल्य योगदान हम सभी दे पायें। ऐसी सद्गुरु के चरणों में अरदास करते हैं।

- हँसती दुनिया का एक पाठक

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया का नियमित पाठक हैं। हमें हँसती दुनिया का हर माह बेसब्री से इन्तजार रहता है। मुझे इसमें प्रकाशित शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्ढक बातें हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती हैं।

'सम्पूर्ण अवतार बाणी' की जो व्याख्या दी गई है वह हमें सद्गुरु के बच्चों पर चलने में मदद करती है।

स्तम्भों में 'कभी न भूलो', 'अनमोल वचन' तथा 'पढ़ो और हँसो' मुझे बहुत प्रिय हैं।

- प्रदीप कुमार (मोगा)

हँसती दुनिया मुझे बहुत पसन्द है। यह पत्रिका बड़ी ही रोचक, प्रेरक और ज्ञानवर्द्धक है। यह पत्रिका बच्चों में अच्छे

संस्कारों का निर्माण करने वाली पत्रिका है। यह पत्रिका हर घर में जानी चाहिए ताकि एक सुन्दर एवं स्वस्थ समाज की स्थापना हो सके।

- ताराचन्द आहूजा (जयपुर)

मैं बचपन से हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। पिछले अंकों से आपने इसमें नवापन लाने का जो प्रयास किये हैं वह सराहनीय है। विशेषकर 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' के पढ़ों की सरल शब्दों में व्याख्या का जो स्तम्भ आपने आरम्भ किया है वह न केवल बच्चों में ब्रालिक सभी आयु वर्ग के पाठकों की अध्यात्म जानकारी में बढ़ोत्तरी करता है। इसके अतिरिक्त रंगीन चित्रकथाएं भी प्रभावित करती हैं।

स्तम्भों में 'अनमोल वचन', 'कभी न भूलो' आदि नियमित स्तम्भ भी पसन्द आते हैं।

- दीपक सचदेव (शान्ति नगर, भोपाल)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं इसे बड़े चाव से पढ़ता हूँ। मुझे इसकी सभी रचनाएं अच्छी लगती हैं। 'सबसे पहले' में हर बार कुछ न कुछ सीख होती है। यह पत्रिका मेरी सच्ची दोस्त है।

- अभिषेक जैन (परतापुर, मेरठ)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं और मेरे घर बाले इसका बेसब्री से इन्तजार करते हैं। नवम्बर माह की पत्रिका प्राप्त हुई। इस अंक में बाबा हरदेव सिंह जी और सद्गुरु माता जी के दिव्य वचन शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक हैं।

इस अंक में कहानी 'इनाम का हकदार' तथा प्रेरक-प्रसंग 'माँ के तीन अनोखे गहने' अच्छे लगे तथा सम्पूर्ण पत्रिका पढ़कर मन पुलकित हो उठा। बच्चों के लिए यह पत्रिका शिक्षाप्रद है।

- पूर्णसिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

**हँसती दुनिया पढ़ते जाओ
जीवन में आगे बढ़ते जाओ।**



radio.nirankari.org

9 AM



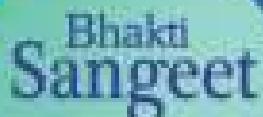
kids.nirankari.org

Catch the latest episode
on 23rd of every month



www.newsdivine.org

Catch the latest episode
on 1st of every month



bhaktisangeet.nirankari.org

Catch the latest episode
on 10th of every month



radio.nirankari.org

Catch the latest episode
on 1st & 10th of every month

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month



SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment



निरंकारी पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया
(चार भाषाओं में)

सन्त निरंकारी
(ग्यारह भाषाओं में)

एक नज़र
(तीन भाषाओं में)

‘सन्त निरंकारी’, ‘हँसती दुनिया’ (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं ‘एक नज़र’ (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विआग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सोयर के पास, निरंकारी कलोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011-47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (पश्चीमी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairatabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJARI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884, G.T. Road, Laximpur-2
East Bardhaman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)